मध्यप्रदेश स्थापना दिवस
की शुभकामनाएं

दैनिक

कारखाने का सफर

आजकल आदमी की दिनचर्या कारखाने की तरह दिन-रात चल रही है, इस दिनचर्या पर ही इस अखबार का नाम रखा गया है

कार्तिक मास में तुलसी
विवाह ... पेज 7

वर्ष 6, अंक 110 | भोपाल, शनिवार 1 नवंबर, 2025 | कार्तिक शुक्ल पक्ष, एकादशी, 2082 | मूल्य 2 रुपए

(ब्रेकिंग न्यूज- पार्ट 1)

क्या प्रबंधन के हाथ से चली गई सपनों की नगरी भेल टाउनशिप

- टाउनशिप के 200 आवास तरण पुष्कर वालों को ठेके पर, दूसरे आवास भी ठेके प्रक्रिया में, सबसे कीमती मकानों पर बन रहे हैं तरण पुष्कर के गेस्ट हाउस
- मांगलिक भवन और उद्यान अब आउट सोर्सेस के हाथो में, सबसे प्राइम लोकेशन पर नटराज कम्युनिटी हाल भी ठेके पर दे दिया
- राज्य सरकार की नजर खाली भूमि पर थी, जिसे ठेके पर दे दिया गया, क्या अब भेल से नहीं ठेकेदारों से संपर्क करना होगा भूमि आवंटन के लिए

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

भारत का दिल मध्य प्रदेश और मध्य प्रदेश का दिल भोपाल, जबकि भोपाल की जान भेल है। भेल देश की सबसे पहली सार्वजनिक क्षेत्र की भारी विद्युत उपकरण बनाने वाली विश्व प्रसिद्ध कंपनी है। 75 साल पहले 6 नंबर 1956 को इसकी आधारशिला रखी गई थी। कारखाना बनने के बाद प्रदेश की सबसे पहली टाउनशिप बनी और इसमें भोपाल की सबसे पहली फोरलेन सड़कें व ग्रीनरी क्षेत्र डेवलप हुआ। 8 लाख से ज्यादा पेड़ों की इस टाउनशिप को सपनों की नगरी भी सुंदरता के कारण कहा जाता था। उस दौरान दूसरे शहर और भोपाल के दूसरे हिस्सों से लोग पर्यटन स्थल के समान इसे देखने आते थे। सबसे पहले करीब 6 हजार मकान की दुर्दशा शुरू हुई और चारों ओर खंडहर मकान दिखाई देने लगे। करीब सवा दो हजार एकड़ खाली भूमि होने से कब्जे शुरू हो गए और इस पर नजर बिल्डर व राज्य सरकार सहित कई लोगों की पड़ने लगी। इस कारण या और किसी कारण से भेल ने अभी हाल ही में भेल दशहरा मैदान को छोड़कर सभी मैदान ठेके पर दे दिया। वहीं धनवंतरी मांगलिक उद्यान, मधुवन व आसपास के क्षेत्रों को भी ठेके पर दे दिया गया। खाली भूमि में जंबूरी मैदान को भी ठेके पर दिया गया, जो इस शहर का सबसे बड़ा मैदान है। वहीं कारखाने से सटा हुआ परेड ग्राउंड को ठेके पर देने की चर्चा है।

भेल जम्बूरी मैदान

प्रबंधन ने ऐसा क्यों किया : जानकार सूत्रों के अनुसार भेल प्रबंधन ने काफी राशि जनरेट कर कार्पोरेट को सौंपी और स्थानीय प्रबंधन की कार्पोरेट ने पीठ थपथपा दी। जिन मकानों को किराए पर देने में भेल आनाकानी करता रहा, उन्हीं मकानों को ठेके पर दे दिया गया। करीब 200 मकान तरण पुष्कर के प्रबंधक को दिए गए, जो गेस्ट हाउस बना रहा है। इसी तरह से और लोगों को भी ग्रुप में मकान ठेके पर दिए जा रहे हैं। जो कंपनी या संस्था या समूह खंडहर मकान ले रहा है, वो तो समय सीमा में खाली नहीं कर सकता और न ही भेल के पास इतनी पावर है कि उस भूमि को खाली करवा ले। इसका मतलब यह हुआ कि खाली भूमि और मकान ठेके पर चले गए तो प्रबंधन के पास सिर्फ भेल दशहरा मैदान और स्पोर्टस काम्प्लेक्स ही रह गया। स्पोर्टस काम्पलेक्स कभी भी ठेके पर जा सकता है। राज्य सरकार ने खाली भूमि और स्पोर्टस काम्पलेक्स ही लेने की बात कही थी। राज्य सरकार ने भेल को भूमि लीज पर दी है, लेकिन भेल मकानों को सुधार नहीं पा रहा। वहीं भेल नगर प्रशासन के पास भी इनकी देखरेख करने के लिए मेन पावर नहीं है। अगर यही स्थिति रही तो अगले एक दो साल में भेल टाउनशिप का नक्शा बदल जाएगा।

नई टाउनशिप बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई थी : भेल कर्मचारियों के अनुसार जब मकान खंडहर हो रहे थे, तब कारखाने के आसपास बहुमंजिला आवास का प्रस्ताव तैयार हुआ था, लेकिन उस पर कोई काम नहीं हुआ। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि उस दौरान डेढ़ हजार मकानों पर अवैध कब्जे थे। वहीं यूनियन नेताओं के अनुसार भेल के स्थानीय प्रशासन ने टाउनशिप को सुधारने का कभी मन नहीं बनाया और न ही किसी अधिकारी को काम करने दिया। यही कारण है कि नगर निगम और पुलिस ने बिना अनुमति के ही जमीन पर कब्जा कर अपने आलीशान ऑफिस और बहुमंजिला इमारतों के काम्पलेक्स बना लिए। अन्ना नगर में नगर निगम का कब्जा बढ़ता ही जा रहा है। अन्ना नगर भी भेल के हाथ से पहले ही निकल चुका है। वहीं गोविंदपुरा के अधिकतर मकानों पर अवैध कब्जे हैं। अगर भेल कर्मचारियों को ही मकान दे देता तो भी टाउनशिप को बचाया जा सकता था। वहीं भेल के बाजारों को भी ठेके पर दिया जा चुका है। यह जानकारी बाहर तक नहीं आई है, लेकिन जल्दी ही इसका जानकारी लोगों तक पहुंच जाएगी।

-(रविवार के अंक में पढ़िए ब्रेकिंग न्यूज पार्ट 2)

फोर्ड चेन्नई प्लांट फिर शुरू करेगी 3,250 करोड़ निवेश से 600 नौकरियां मिलेंगी

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी चेन्नई

फोर्ड ने चेन्नई प्लांट में 3,250 करोड़ के भारी निवेश के साथ नए सिरे से परिचालन शुरू करने की घोषणा की है, जिससे 600 से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां सृजित होंगी। यह कदम भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की फोर्ड की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और तमिलनाडु के ऑटोमोबाइल क्षेत्र को नई गति प्रदान करेगा। अमेरिकी ऑटोमोबाइल कंपनी फोर्ड ने एक बार फिर भारत में अपने निर्माण कार्य को शुरू करने की घोषणा की है।

कंपनी जल्द ही चेन्नई स्थित अपने मारेमलई नगर प्लांट में उत्पादन दोबारा शुरू करने जा रही है, जहां अब नई पीढ़ी के इंजन बनाए जाएंगे। मौजूद जानकारी के अनुसार, फोर्ड ने इस परियोजना में शुरुआती निवेश के तौर पर 3,250 करोड़ लगाने की घोषणा की है। कंपनी के अनुसार, इस निवेश से 600 से अधिक लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है।

गौरतलब है कि फोर्ड ने वर्ष 2021 में अपने चेन्नई संयंत्र का संचालन बंद कर दिया था। हालांकि, सितंबर 2024 में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन के अमेरिका दौरे के दौरान कंपनी ने राज्य सरकार को एक Letter of Intent (LOI) सौंपते हुए फिर से उत्पादन शुरू करने की इच्छा जताई थी। बता दें कि अब उस पहल को आगे बढ़ाते हुए फोर्ड और तमिलनाडु सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस समझौते में यह तय किया गया है कि भारत को फोर्ड की वैश्विक Ford+ योजना के तहत एक प्रमुख विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। मौजूदा योजना के तहत, इस वर्ष के अंत तक परियोजना का काम शुरू होने की उम्मीद है। इसके बाद चेन्नई संयंत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 2,35,000 इंजन तक बढ़ाई जाएगी और 2029 तक उत्पादन शुरू होने का अनुमान है। फोर्ड मोटर कंपनी के इंटरनेशनल मार्केट्स ग्रुप के अध्यक्ष जेफ मारेन्टिक ने कहा कि "हम चेन्नई संयंत्र की भूमिका को लेकर उत्साहित हैं और तमिलनाडु सरकार के सहयोग के लिए आभारी हैं। यह निर्णय भारत की विनिर्माण क्षमता में हमारे विश्वास को और मजबूत करता है।"

वहीं, तमिलनाडु के उद्योग मंत्री टी. आर. बी. राजा ने कहा कि फोर्ड का चेन्नई में फिर से निर्माण कार्य शुरू करने का निर्णय राज्य के ऑटोमोबाइल सेक्टर को नई ऊर्जा देगा।

उन्होंने कहा, "यह न केवल फोर्ड संयंत्र में उत्पादन की वापसी है, बल्कि राज्य के ऑटोमोटिव उद्योग के भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम भी है। मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन के नेतृत्व में राज्य सरकार पूरी तरह से फोर्ड के संचालन में सहयोग करेगी।"

इस कदम के साथ तमिलनाडु एक बार फिर भारत के प्रमुख ऑटोमोबाइल हब के रूप में अपनी स्थिति को और मजबूत करता नजर आ रहा है। उद्योग जगत का मानना है कि यह निवेश राज्य के आर्थिक परिदृश्य और रोजगार सृजन दोनों के लिए सकारात्मक साबित होगा। फोर्ड की यह वापसी भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए एक बड़े भरोसे के संकेत के रूप में देखी जा रही है, जो देश के विनिर्माण क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दिलाने की दिशा में अहम भूमिका निभा सकती है।

'एक और मौका दीजिए', चुनाव से पहले नीतीश कुमार की भावुक अपील, बिहार को टॉप राज्यों में ले जाएगा हमारा गठबंधन

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को राज्य में विधानसभा चुनाव से पहले बिहार के नागरिकों के लिए एक वीडियो जारी किया और कहा कि 2005 में पहली बार चुने जाने के बाद से उन्होंने "ईमानदारी और कड़ी मेहनत" से उनकी "सेवा" की है। जद(यू) नेता ने कहा, "चाहे आप हिंदू हों, मुसलमान हों, सवर्ण हों, पिछड़े हों, अति पिछड़े हों, दलित हों, महादलित हों, हमने सबके लिए काम किया है। हमने अपने परिवार के लिए कुछ नहीं किया।" बिहार के मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाइटेड (JDU) के नेता नीतीश कुमार ने शनिवार को लोगों से उन्हें 'एक और मौका' देने की अपील की और राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) को वोट देने का आग्रह किया। बिहार में पहले चरण के मतदान से कुछ दिन पहले अपनी पार्टी द्वारा X (पहले ट्विटर) पर साझा किए गए एक वीडियो संदेश में, कुमार ने जोर देकर कहा कि केवल NDA ही राज्य का विकास कर सकता है। उन्होंने कहा कि उनके शासन में विकास की गति काफ़ी तेज़ हुई है। बिहार में दो चरणों में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए मतदान 6 और 11 नवंबर को होगा। नतीजे 14 नवंबर को घोषित किए जाएँगे। मुख्यमंत्री ने कहा, "मैं आपसे इस बार विधानसभा चुनाव में NDA उम्मीदवारों को विजयी बनाने का अनुरोध करता हूँ। हमें, NDA को, एक और मौका दीजिए। इसके बाद और काम होगा, जिससे बिहार का इतना विकास होगा कि वह शीर्ष राज्यों में शामिल हो जाएगा।" अपने संदेश में, कुमार ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर भी निशाना साधा और कहा कि 2005 में जब वह मुख्यमंत्री बने थे, तब बिहार की हालत बेहद खराब थी।

पीएम मोदी ने बिहार में गमछा लहराया

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी मुजफ्फरपुर

समर्थकों का सैलाब, 'मोदी-मोदी' के गगनभेदी नारे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपने खास गमछे को लहराना, चुनावी राज्य बिहार के मुजफ्फरपुर में उनकी यात्रा की यादगार यादें बन गईं। इस घटना का एक वीडियो अब सोशल मीडिया पर भी धूम मचा रहा है। दरअसल शुक्रवार को मुजफ्फरपुर में प्रधानमंत्री का भव्य स्वागत हुआ, जहां उनके हेलीकॉप्टर के उतरने के समय उत्साही समर्थक उमड़ पड़े। शुक्रवार की गर्मी और उमस भरे मौसम में उमड़े जनसमर्थन से अभिभूत प्रधानमंत्री मोदी ने आभार प्रकट करते हुए भीड़ की ओर अपना गमछा लहराया। वीडियो में, प्रधानमंत्री मोदी लगभग 30 सेकंड तक उत्साहित भीड़ के सामने मधुबनी प्रिंट वाला गमछा लहराते हुए दिखाई दे रहे हैं। इसके बाद वे छपरा में अपनी रैली के लिए रवाना हो गए । हालांकि, यह पहली बार नहीं है जब प्रधानमंत्री मोदी बिहार में ऐसा करते दिखे हों। अगस्त में, औंटा-सिमरिया पुल के उद्घाटन के तुरंत बाद प्रधानमंत्री ने भीड़ की ओर गमछा लहराया था। हालांकि, बिहार में प्रधानमंत्री मोदी के गमछा लहराने के पीछे एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश छिपा है। भारत के अधिकांश हिस्सों में, खासकर बिहार और बंगाल जैसे गर्म और आर्द्र राज्यों में, साधारण गमछा मजदूर वर्ग और किसानों का पर्याय बन गया है।

APEC में चीन की धमकः शी जिनपिंग के इर्द-गिर्द घूम रही विश्व राजनीति

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

दक्षिण कोरिया के ऐतिहासिक शहर ग्योंगजू में आयोजित हो रहे एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEC) शिखर सम्मेलन में इस बार चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग केंद्र में नज़र आने वाले हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार, शुक्रवार को वे कनाडा और जापान के नेताओं के साथ महत्वपूर्ण बैठकें करेंगे। यह मुलाकात ऐसे समय में हो रही है जब हाल ही में चीन और अमेरिका के बीच एक अस्थायी व्यापार समझौता हुआ है, जिसने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित करने वाले दुर्लभ खनिजों के निर्यात पर प्रतिबंधों को रोक दिया है।

गौरतलब है कि यह समझौता अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दक्षिण कोरिया से रवाना होने से ठीक पहले हुआ था। बता दें कि ट्रंप इस बार एपीईसी के दो दिवसीय मुख्य सत्र में शामिल नहीं होंगे, और उनकी जगह अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। सम्मेलन का मुख्य विषय इस बार वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने और व्यापार में सहयोग बढ़ाने पर केंद्रित है, हालांकि इस संगठन में लिए गए निर्णय बाध्यकारी नहीं होते हैं।

मौजूदा स्थिति में सभी की नज़रें शी जिनपिंग और जापान की नई प्रधानमंत्री साने ताकाइची की मुलाकात पर टिकी हैं। ताकाइची हाल ही में जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री बनी हैं और उनके राष्ट्रवादी विचारों और सुरक्षा नीतियों को लेकर चीन में चिंता जताई जा रही है। रिपोर्टों के मुताबिक, उन्होंने अपने कार्यकाल की शुरुआत में ही जापान के द्वीपों की रक्षा के लिए सैन्य तैयारी को तेज़ करने के निर्देश दिए हैं। दोनों देशों के बीच जापानी नागरिकों की चीन में हिरासत और जापानी कृषि उत्पादों पर बीजिंग के आयात प्रतिबंध जैसे संवेदनशील मुद्दे भी चर्चा में शामिल हो सकते हैं। वहीं कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी भी शुक्रवार शाम 4 बजे शी जिनपिंग से मुलाकात करेंगे। उनका उद्देश्य चीन के साथ फिर से संवाद की शुरुआत करना है। बता दें कि कनाडा और चीन के रिश्ते पिछले कुछ वर्षों में तनावपूर्ण रहे हैं। कार्नी से पहले प्रधानमंत्री रहे जस्टिन ट्रूडो के कार्यकाल में कनाडाई नागरिकों की चीन में गिरफ्तारी और फांसी की घटनाओं के बाद दोनों देशों के बीच मतभेद गहरे हो गए थे। हाल ही में चीन ने कनाडा से आयातित कैनोला तेल पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने की घोषणा की थी, जबकि कनाडा ने पहले चीनी इलेक्ट्रिक वाहनों पर 100 % टैरिफ लगाया था। दूसरी ओर, सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में दक्षिण कोरिया के प्रधानमंत्री ली जे म्युंग ने "एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग की भावना को पुनर्जीवित करने" पर चर्चा की अध्यक्षता की है। दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्री चो ह्युन के अनुसार, इस बार भी एक संयुक्त बयान को लेकर बातचीत जारी है, लेकिन यह तय नहीं है कि कोई ठोस समझौता हो पाएगा या नहीं।

लखनऊ की अवधी पाककला को मिली यूनेस्को पहचान, नवाबों का शहर हुआ रचनात्मक शहरों में शामिल

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

नवाबों के शहर लखनऊ, जो अपने अवधी व्यंजनों, स्थापत्य कला के चमत्कारों और काव्यात्मक अतीत के लिए जाना जाता है, ने अपनी उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ ली है। विश्व नगर दिवस (शुक्रवार) पर, उज़्बेकिस्तान के समरकंद में यूनेस्को महाधिवेशन के 43वें सत्र के दौरान, उत्तर प्रदेश की राजधानी को आधिकारिक तौर पर यूनेस्को का 'रचनात्मक पाक-कला शहर' घोषित किया गया, जिससे यह शहर 70 वैश्विक पाक-कला केंद्रों में शामिल हो गया। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने इस कदम का स्वागत करते हुए कहा कि पाक-कला पर्यटन लंबे समय से पर्यटकों को राज्य की ओर आकर्षित करता रहा है और यह दर्जा राज्य को इस क्षेत्र को और आगे बढ़ाने में मदद करेगा। उन्होंने कहा, "पाक-कला पर्यटन पीढ़ियों से उत्तर प्रदेश में पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है और आने वाले वर्षों में राज्य में इस क्षेत्र का नेतृत्व करने की अपार क्षमता है।"

राज्य के पर्यटन निदेशालय ने 31 जनवरी, 2025 को संस्कृति मंत्रालय को लखनऊ का नामांकन प्रस्तुत किया और भारत सरकार ने 3 मार्च, 2025 को शहर को देश की आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में चुना। अधिकारियों ने कहा कि 31 अक्टूबर को यूनेस्को की घोषणा औपचारिक रूप से क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क में शहर के प्रवेश की पुष्टि करती है। प्रमुख सचिव, पर्यटन एवं संस्कृति अमृत अभिजात ने कहा कि लखनऊ की खाद्य संस्कृति, शाही रसोई से लेकर रेहड़ी-पटरी वालों तक, लंबे समय से पर्यटकों को आकर्षित करती रही है और यूनेस्को का टैग इस पहुँच को और बढ़ाएगा। उन्होंने इस क्षेत्र की गति को रेखांकित करने के लिए हाल ही में आए पर्यटकों की संख्या का हवाला दिया: "2024 में, लखनऊ में लगभग 8,274,154 पर्यटक (घरेलू और विदेशी) आए, जबकि 2025 की पहली छमाही में ही 7,020,492 से अधिक पर्यटक आए, जो दर्शाता है कि कैसे भोजन और संस्कृति पर्यटन विकास को गति दे रहे हैं।" संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की महानिदेशक ऑड्रे अजोले ने 58 शहरों को यूनेस्को के रचनात्मक शहरों के नेटवर्क के नए सदस्य के रूप में नामित किया है। इस सूची में अब 100 से अधिक देशों के 408 शहर शामिल हैं। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ को ''पाक कला'' श्रेणी में मान्यता दी गई है।

यूनेस्को में भारत के स्थायी प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर एक 'पोस्ट' में कहा, ''भारत के लिए गर्व का क्षण। लखनऊ की समृद्ध पाककला विरासत को अब वैश्विक मंच पर पहचान मिली है!'' प्रतिनिधिमंडल ने कहा, ''विश्व नगर दिवस 2025 (30 अक्टूबर) के अवसर पर लखनऊ को 'यूनेस्को क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनॉमी' नामित किया गया है। लखनऊ के साथ 58 नए शहरों को 'यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क' (यूसीसीएन) में स्थान मिला है। यूसीसीएन में अब 100 से अधिक देशों के 408 शहर शामिल हैं।''

लखनऊ अपने समृद्ध और पारंपरिक लजीज व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें चाट से लेकर अवधी व्यंजन और स्वादिष्ट मिठाइयां शामिल हैं। विश्व नगर दिवस पर घोषित यह सम्मान शहरों को ''सतत शहरी विकास के प्रेरक के रूप में रचनात्मकता को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता'' के लिए सम्मानित करता है। अजोले ने कहा, ''यूनेस्को के रचनात्मक शहर दर्शाते हैं कि संस्कृति और रचनात्मक उद्योग विकास के ठोस प्रेरक हो सकते हैं। हम 58 नए शहरों का स्वागत करके एक ऐसे नेटवर्क को मजबूत कर रहे हैं जहां रचनात्मकता स्थानीय पहलों का समर्थन करती है, निवेश आकर्षित करती है और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देती है।'' वर्ष 2004 में स्थापित यूसीसीएन का उद्देश्य उन शहरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है जो समावेशी और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए संस्कृति और रचनात्मकता का लाभ उठाते हैं।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

एकादशी विशेष : तुलसी विवाह का आध्यात्मिक लाभ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

तुलसि श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे ।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ – तुलसीस्तोत्र, श्लोक 15
अर्थ : हे तुलसी, आप लक्ष्मी की सखी, शुभदायिनी, पापों का नाश करने वाली और पुण्यदा हैं। जिनकी नारदजी ने स्तुति की है और जो नारायण को प्रिय हैं। मैं आपको प्रणाम करता हूँ,

परिचय : हिंदू धर्म में, तुलसी को देवी के रूप में पूजा जाता है। हालाँकि हम अन्य समय में उन्हें तुलसी माता के रूप में पूजते हैं, कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी से पूर्णिमा तक, उन्हें पुत्री के रूप में पूजा जाता है और भगवान विष्णु के शालिग्राम रूप या श्री विष्णु की मूर्ति (बाल कृष्ण की मूर्ति) के साथ तुलसी का विवाह कराया जाता है। प्राचीन काल में बाल विवाह की प्रथा थी। इस विवाह समारोह को पूजा के उत्सव के रूप में मनाने की प्रथा है। (विष्णु पुराण और पद्म पुराण सहित कई धार्मिक ग्रंथों में तुलसी विवाह का उल्लेख है।)

हर साल तुलसी विवाह क्यों किया जाता है?
तुलसी विवाह एक व्रत माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस व्रत को करने से कर्ता को कन्यादान का फल मिलता है। तुलसी विवाह व्रत एक काम्य व्रत है। इससे सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं और वैवाहिक जीवन में आने वाली बाधाएँ दूर होती हैं। उत्तम संतान की प्राप्ति होती है।

मान्यता है कि प्रत्येक विवाहित स्त्री को तुलसी विवाह अवश्य करना चाहिए। ऐसा करने से उसे अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

घर की कन्या के लिए श्री कृष्ण जैसा आदर्श वर पाने की कामना से तुलसी विवाह किया जाता है। (जोशी, महादेव शास्त्री (2001)। भारतीय संस्कृति कोष खंड 5। पुणेः भारतीय संस्कृति कोष मंडल प्रकाशन।)

तुलसी विवाह के बाद, चातुर्मास के दौरान लिए गए सभी व्रतों का उद्यापन किया जाता है।

विवाह संस्कारों का महत्व भावी पीढ़ी को ज्ञात होना चाहिए। इसके लिए सभी को अपने घर पर यह पूजनोत्सव अवश्य करना चाहिए।

तुलसी का महत्व : हिंदू धर्म में, पापों के नाश के लिए तुलसी का अत्यधिक महत्व है। तुलसी न केवल आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि आयुर्वेद में भी इसका उतना ही महत्व है। तुलसी एक बहुउपयोगी और गुणकारी औषधि है। इसलिए शास्त्रों ने ईश्वर की पूजा और श्राद्ध में तुलसी को अनिवार्य बताया है।

गले में तुलसी की माला धारण करना धर्मपरायणता और पुण्य का प्रतीक माना जाता है।

तुलसी भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय है। तुलसी के पत्ते धारण करने से उन्हें जितनी प्रसन्नता होती है, उतनी किसी और चीज़ से नहीं होती।

तुलसी पूजन के बिना दैनिक पूजा पूरी नहीं होती।

ऐसा माना जाता है कि जिस व्यक्ति के शरीर पर मृत्यु के समय तुलसी के पत्ते होते हैं, वह वैकुंठ जाता है।

तुलसी प्रदूषित वायु को सोख लेती है और जीवनदायिनी वायु छोड़ती है, जिससे वायु शुद्ध होती है। यह विज्ञान द्वारा भी सिद्ध किया जा चुका है। इसलिए, घर के द्वार पर तुलसी वृंदावन बनाया जाता है। शहरी क्षेत्रों में भी, दरवाजे के पास, खिड़की में गमले में तुलसी का पौधा लगाया जाता है। दरवाजे पर तुलसी का होना शुभ माना जाता है।

तुलसी विवाह का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित करें:
विष्णु और लक्ष्मी तत्वों से लाभ पाने के लिए, विवाह की तैयारी करते समय, यह भावना रखें कि यह वास्तव में लक्ष्मी माता और श्री विष्णु का विवाह है।

श्री विष्णु और श्री लक्ष्मी की शरण लें और प्रार्थना करें कि 'आप जिस विवाह की इच्छा रखते हैं, उसकी तैयारी करें।'

तुलसी विवाह होने पर भी, जल्दबाजी होती है। इससे अक्सर मन पर तनाव और चिड़चिड़ापन होता है, और तुलसी विवाह को भावनात्मक बनाने के लिए, व्यक्ति को लगातार अपने मन का निरीक्षण करना चाहिए। मन को प्रसन्न और सकारात्मक रखने का प्रयास करना चाहिए। सभी कार्यों की योजना पहले से बना लें। विवाह कार्य में यथासंभव सभी को शामिल करें।

इस पूजनोत्सव के भावपूर्ण समापन के लिए श्री विष्णु और श्री लक्ष्मी के चरणों में कृतज्ञता व्यक्त करें।

तुलसी विवाह संध्या काल में क्यों किया जाता है? : यह समय गोधूलि बेला (गाय चराकर घर लौटने का समय) अर्थात संध्या काल है। मान्यता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन श्री विष्णु अपनी योग निद्रा से जागकर सृष्टि के संचालन का कार्य पुनः प्रारंभ करते हैं। तुलसी विवाह काल में वातावरण में विष्णु तत्व और लक्ष्मी तत्व अत्यधिक सक्रिय रहते हैं। इनका एक साथ लाभ उठाने के लिए, संध्या काल में तुलसी विवाह किया जाता है।

तुलसी विवाह का बदलता स्वरूप : आजकल इस उत्सव को भावपूर्ण बनाने की बजाय दिखावटीपन की प्रवृत्ति अधिक है। बिजली की रोशनी, कृत्रिम और फिजूलखर्ची वाली सजावट, पटाखों का अत्यधिक प्रयोग और कुछ स्थानों पर नाश्ते की जगह बुफे लेने की गलत प्रथा आम हो गई है।

तुलसी विवाह भारतीय संस्कृति की एक अनूठी पहचान है। आइए, इस त्यौहार की शुद्ध जानकारी प्राप्त करके इसे मनाएँ और अपनी संस्कृति का संरक्षण करें।

-सन्दर्भ : सनातन के ग्रन्थ व अन्य ।

संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज की 755 वीं जन्मोत्सव, देवउठनी एकादशी एवं तुलसी विवाह आज शनिवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर रायसेन रोड पटेल नगर भोपाल में भक्ति आंदोलन के महान प्रवर्तक,समाज में समानता और सेवा का अद्वितीय संदेश देने वाले संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज की 755 वीं जन्मोत्सव के अवसर पर आज शनिवार प्रातः 10:00 बजे से गर्भग्रह परिक्रमा में स्थापित संत शिरोमणि नामदेव महाराज का भक्तों द्वारा अभिषेक, पूजन विधि विधान से किया जाएगा। साथ ही देवउठनी एकादशी भगवान विष्णु जी की विधि विधान से पूजन की जाएगी पौराणिक मान्यता के अनुसार, जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस दिन व्रत रखता है और भगवान विष्णु की आराधना करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है और उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यह दिन विवाह, गृहप्रवेश, भूमि पूजन, यज्ञ आदि शुभ कार्यों की दोबारा शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। मंदिर प्रांगण में सांय 6:30 बजे से तुलसी विवाह किया जाएगा जिससे शुभ और मांगलिक कार्यों जैसे विवाह और गृह प्रवेश की शुरुआत होती है। महान संत नामदेव जी महाराज का जीवन भगवान विठ्ठल के प्रति गहन भक्ति, सामाजिक समरसता, निष्ठा व विनम्रता तथा सच्चे संतत्व का उदाहरण है। जात-पात, ऊँच-नीच और सामाजिक भेदभाव के उस दौर में उन्होंने सबको ईश्वर की संतान मानकर प्रेम, समानता और भाईचारे का संदेश दिया। उनकी रचनाएँ आज भी गुरुग्रंथ साहिब में स्थान पाकर संसार को आलोकित कर रही हैं। उनकी वाणी में भक्ति का रस है और उनके जीवन में त्याग,तपस्या और सेवा का अमूल्य दर्शन,संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज की जयंती हम सभी के लिए आत्मचिंतन और भक्ति के पथ पर चलने की प्रेरणा है। यह अवसर है कि हम उनके विचारों को जीवन में उतारें और उनके दिखाए मार्ग पर चलकर समाज में शांति, एकता और मानवता का संचार करें। इस शुभ अवसर पर आप सभी भक्त उपस्थित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

भारत के महानायक, मालवा के शासक सम्राट विक्रमादित्य

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जम्बूद्वीप का आशय प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित एक भौगोलिक क्षेत्र से है, जिसमें मुख्य रूप से वर्तमान एशिया महाद्वीप और भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश हिस्सा शामिल है। भारतीय उपमहाद्वीप के आर्य खंड भाग में मालवा का क्षेत्र है ! आर्य खंड का अर्थ जैन धर्म के ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार, जम्बूद्वीप नामक क्षेत्र का एक हिस्सा माना गया है।

आर्यखंड मे स्थित मालवा के शासको मे अदबदेव ,महामार,देवापी,देवदत्त,मालवा पर मगध साम्राज्य का शासन,नाबोवाहन,गंधर्वसेन,मालवा पर शकों का शासन रहा, इन सभी शासको के उपरांत भारत के महानायक, सम्राट विक्रमादित्य का शासन रहा !

मालवा राजक्षेत्र के अंतर्गत धार, झाबुआ, रतलाम, देवास, इंदौर, उज्जैन, मंदसौर, नीमच, आगर, राजगढ़, शाजापुर, सीहोर, गुना, विदिशा और रायसेन शामिल हैं। इस क्षेत्र के कुछ हिस्से राजस्थान के झालावाड़, प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा जिलों में भी हैं। सम्राट विक्रमादित्य एक महान भारतीय सम्राट थे, जो उज्जैन के राजा थे ! स्कंदपुराण के अनुसार, वह 20 वर्ष की आयु में राजा बने। विक्रम संवत का प्रवर्तन 57 ईसापूर्व में आक्रमणकारियों शकों को हराने के बाद हुआ । उनके शासनकाल में ज्ञान, कला, विज्ञान और न्याय का बहुत विकास हुआ। उन्हें वीरता, बुद्धिमत्ता और उदारता के लिए जाना जाता है! उन्होंने उत्तर भारत पर अपना शासन व्यवस्थित किया था। उनके पराक्रम को देखकर ही उन्हें महान सम्राट कहा गया और उनके नाम की उपाधि कुल 14 भारतीय राजाओं को दी गई। राजा विक्रमादित्य नाम, 'विक्रम' और 'आदित्य' के समास से बना है जिसका अर्थ 'पराक्रम का सूर्य' या 'सूर्य के समान पराक्रमी' है।उन्हें विक्रम या विक्रमार्क भी कहा जाता है! पौराणिक कथाओं के अनुसार, राजा विक्रमादित्य के पिता राजा गंधर्वसेन और माता सौम्यदर्शना थीं। महाराज विक्रमादित्य की कई रानियाँ थीं, जिनमें मदनलेखा, मलयावती, पद्मिनी, चेल्ल और चिल्लमहादेवी शामिल हैं। कुछ पौराणिक स्रोतों में गुणवती, चंद्रवती और मदनसुंदरी का भी उल्लेख है।

महाराज विक्रमादित्य ने अपने सभा में नवरत्नों को रखने का

प्रचलन सर्वप्रथम किया था। उनको देखकर ही आने वाले राजाओं ने भी अपनी सभाओ में नवरत्नों को रखने का प्रचलन हुआ। उनके नवरत्न धनवंतरी, क्षणपक, अमर सिंह, कालिदास, वेतालभट्ट, शंकु, वररुचि, घटकर्पर, और वराहमिहिर थे। ये सभी नवरत्न अपने क्षेत्र में माहिर और विद्वान थे।

रत्न धनवंतरी एक आयुर्वेदिक वैद्य थे, धन्वंतरि ने एक बार युद्ध में विक्रामिदत्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे उनके जीवन की कोई उम्मीद नहीं बची थी धन्वंतरि ने अपनी चमत्कारिक औषधी से राजा विक्रामिदत्य के प्राण बचाये थे। रत्न क्षणपक नवरत्नों में दूसरे थे, यह एक वह एक सन्यासी थे जो बौद्ध धर्म को मानते थे ! रत्न अमर सिंह एक महान विद्वान थे जिनको पंडितों का पिता कहां जाता था उन्होंने ही शब्दकोश का निर्माण किया बोधगया के मंदिर में अमर सिंह का शिलालेख है!

रत्न शंकु सम्राट विक्रमादित्य के राज्य में नीति शास्त्र के सबसे बड़े ज्ञानी एवम एक रस आचार्य थे ! रत्न वैतालभट्ट (बेतालभट्ट) एक धर्माचार्य थे, और यह माना जाता है कि उन्होंने ही सम्राट विक्रमादित्य को 16 छंद यानी नीति आचरण सिखाया था। यह युद्ध कौशल के महारथी भी थे जो हमेशा सम्राट विक्रमादित्य के निकट ही रहते थे, इन्हें द्वारपाल भी कहा जाता था।

रत्न खटकपारा एक संस्कृत विद्वान थे उन्होंने यह प्रतिज्ञा ली थी कि जो भी उन्हें अनुप्रास और यमक में हरा देगा वह उनके घर पर फूटे हुए घड़े से पानी भरेंगे ! रत्न कालिदास नवरत्नों में सबसे प्रसिद्ध थे आज भी लोग कालिदास को एक संस्कृत महाकवि मानते हैं वह राजा विक्रमादित्य के प्राण प्रिय कवि थे। रत्न वराह मीर उस युग के सबसे प्रमुख ज्योतिषियों में से एक थे उन्होंने विक्रमादित्य के बेटे की मृत्यु की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी उन्होंने ही विष्णु स्तंभ का निर्माण करवाया था! रत्न वररुचि एक कवि और वैयाकरण थे। उन्हें शास्त्रीय संगीत का पूर्ण ज्ञान था।

मध्यप्रदेश में स्थित उज्जैन-महानगर के महाकाल मन्दिर के पास 'विक्रमादित्य टीला' है। वहाँ विक्रमादित्य के संग्रहालय में नवरत्नों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं।

महाराजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक वैतालभट्ट ने ही विक्रम तथा बेताल की कहानी की वेताल पंचतवती की कहानी लिखी थी जिसकी लोकप्रियता पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

अद्भुत एवं चमत्कारी चमत्कारी सिंहासन के पौराणिक उल्लेख विक्रमादित्य के उस सिंहासन से जुड़े हुए हैं जो खो गया था और कई सदियों बाद धार के परमार राजा भोज द्वारा बरामद किया गया था। स्वयं राजा भोज भी काफ़ी प्रसिद्ध थे और कहानियों की यह श्रृंखला उनके सिंहासन पर बैठने के प्रयासों के बारे में है। इस सिंहासन में 32 पुतलियां लगी हुई थीं, जो बोल सकती थीं और राजा को चुनौती देती हैं कि राजा केवल उस स्थिति में ही सिंहासन पर बैठ सकते हैं, यदि वे उनके द्वारा सुनाई जाने वाली कहानी में विक्रमादित्य की तरह उदार हैं। इससे भोज की 32 कोशिशें (और 32 कहानियां) सामने आती हैं और हर बार भोज अपनी हीनता स्वीकार करते हैं। अंत में पुतलियां उनकी विनम्रता से प्रसन्न होकर उन्हें सिंहासन पर बैठने देती हैं। राजा भोज के बाद कोई भी उस सिंहासन पर नही बैठ पाया। इसका उल्लेख हमें उज्जैन के साहित्य मे मिलता है।

राज्यमंत्री डॉ टेटवाल द्वारा कपिलेश्वरवर मेले की अंतिम तैयारियों का निरीक्षण किया

दैनिक कारखाने का सफर। सांरगपुर

सांरगपुर में शुक्रवार को प्रदेश सरकार के तकनीकी शिक्षा कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार एवं क्षेत्रीय विधायक डॉ गौतम टेटवाल डॉ.गौतम टेटवाल द्वारा दिनांक 01 नवम्बर 2025 से प्रांरभ होने वाले कपिलेश्वटर मेला (जतरा) स्थेल पर पहुंचकर अंतिम चरण की आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उनके द्वारा मेला स्थल निरीक्षण के दौरान मेला क्षेत्र में मूलभूत व्यवस्था ओं को ध्याान रखने एवं नदी के किनारे एवं मन्दिर पहुंच मार्ग पर सुरक्षा हेतु बेरीकेटिंग करने, पर्याप्त लाईटिंग,पार्किंग व्यवस्था के साथ ही एस डी आर एफ की टीम व तैराकों की जानकारी तैयार रखने के लिए भी निर्देशित किया गया। दिनांक 01.11. 2025 को कार्तिक मेले का झंडा वंदन कार्यक्रम प्रात 8.00 बजे किया जावेगा। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय राज्य मंत्री श्री गौतम जी टेटवाल रहेंगे। इस दौरान विधायक प्रतिनिधि पृथ्वीराज टेटवाल, भाजपा नगर मण्डल अध्यक्ष महेश पुष्प्द, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व रोहित बम्होरे अनुविभागीय अधिकारी पुलिस अरविन्द सिंह मुख्य नगर पालिका अधिकारी सुश्री ज्योति सुनहरे व तहसीलदार आकाश शर्मा, थाना प्रभारी सुश्री अकांक्षा हाडा व नगर पालिका सांरगपुर उपयंत्री अरूण गौड, विक्की ब्राहम्णे, राजस्व उप निरीक्षक सूर्यप्रकाश झाला व कर्मचारी गौरव शर्मा, राकेश सिसौदिया व हल्कार पटवारी शहजाद खां आदि कर्मचारी उपस्थित थे।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती एवं पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी की पुण्यतिथि पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर श्रमिक कांग्रेस नेता दीपक गुप्ता द्वारा उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया इस अवसर पर सरदार पटेल के जीवन और कार्यों को याद किया गया दीपक गुप्ता के कहा कि आजादी के बाद पूरा देश विभिन्न रियासतों में बंटा हुआ था देश की लगभग 265 रियासतों को एक करने का कार्य सरदार पटेल ने किया था। दीपक गुप्ता ने इंदिरा गांधी जी प्रतिमा पर भी माल्यार्पण किया और कहा कि आयरन लेडी इंदिरा गांधी जी ने देश को हरित क्रांति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, महिलाओं का सशक्तिकरण इंदिरा जी द्वारा किया गया। दीपक गुप्ता ने कहा कि हम सभी को उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए और उनके आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जाना चाहिए इस अवसर पर दीपक गुप्ता के साथ परितोष नंदी, सुशील प्रजापति, उपेंद्र सिंह, सचिन लारिया सहित कई जन शामिल हुए।

आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा तभी साकार होगी, जब मातृशक्ति आत्मनिर्भर बनेगी"

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

विशेष अतिथि श्री मोहन नागर ने कहा कि "आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा तभी साकार होगी, जब मातृशक्ति आत्मनिर्भर बनेगी।"

उन्होंने कहा कि आज भारत की बेटियाँ रक्षा, विज्ञान, प्रशासन, खेल और उद्यमिता हर क्षेत्र में नया इतिहास रच रही हैं। प्रधानमंत्री जी का लक्ष्य है कि 2034 तक भारत पूर्णतः आत्मनिर्भर राष्ट्र बने, और इसमें महिला शक्ति की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।महिला सम्मेलन में वक्ताओं ने भारतीय संस्कृति में नारी के स्थान पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने कहा यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताअर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं। मंत्री पवार ने कहा सतयुग से कलियुग तक की प्रेरणादायक नारियों — माता शतरूपा, सीता, अनसूया, द्रौपदी, अहिल्याबाई होलकर, रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू जैसी महान विभूतियों के योगदान का उल्लेख किया गया।

कार्यक्रम में कहा गया कि : भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक जीवंत राष्ट्रपुरुष है। इसकी मिट्टी, नदियाँ, पर्वत और संस्कृति हमारी पहचान हैं। यही भारत की आत्मा है — संस्कृति, परंपरा और विचारधारा का संगम कार्यक्रम के समापन अवसर पर मंत्री डॉ. गौतम टेटवाल ने महिलाओं को सम्मानित किया और मातृशक्ति से यह संकल्प लेने का आह्वान किया कि हर बेटी शिक्षित बने, हर माँ स्वस्थ रहे, हर बहन आत्मनिर्भर बने और हर नारी को समान सम्मान मिले। कार्यक्रम का संचालन आकर्षक शैली में किया गया और बड़ी संख्या में उपस्थित मातृशक्ति ने "नारी ही नारायणी है — आत्मनिर्भर भारत, सशक्त नारी" के नारे के साथ उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई।

स्वच्छता ही सेवा– विशेष अभियान 5.0 का शुभारंभ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एवं अनुसंधान केंद्र (ICMR–BMHRC) द्वारा "स्वच्छता ही सेवा – विशेष अभियान 5.0" के अंतर्गत आयोजित सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह तथा स्वच्छता अभियान समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होकर दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया एवं विचार साझा किए। यह अभियान स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने और समाज में स्वच्छ भारत मिशन की भावना को सशक्त बनाने का उत्कृष्ट प्रयास है। इस अवसर पर BMHRC की निदेशक डॉ॰ मनीषा श्रीवास्तव, रूमा रस्तोगी, हेमंत पाण्डे प्रमुख रूप से उपस्थित रहे ।

वन संपदा अशेष है, रतनो की है खान है हमारा मध्यप्रदेश

दिनेश गुप्ता मकरंद-
सतना (मध्यप्रदेश)

दोहा :
१. भारत का जो हृदय है, जिसका हृदय विशाल l
मेरा मध्य प्रदेश वह, सबसे मालामाल ll
२. वन संपदा अशेष है, रतनो की है खान
विश्व पटल पर अलग ही,है इसकी पहचान
****

चौपाईयां

1.जय जय मध्य प्रदेश हमारा
इसकी महिमा अति विस्तारा
राष्ट्र पुरुष यदि भारत देश
हृदय है इसका मध्यप्रदेश
****
2.भोजपाल इसकी रजधानी
और जबलपुर संस्कारधानी
विविध व्यंजनों का है जायका
नदियों का है यही मायका
****
यहां नहीं है जल का संकट
द्विनद स्रोत है अमरकंटक
जल से प्लावित धारा सर्वदा
ताप्ती चंबल सोन नर्मदा
****
4.स्वर्णिम है इस सोन का कंकर
रीवा का हर कंकर शंकर
मध्य प्रदेश की जीवन रेखा
यहां से निकली है कर्क रेखा
****
5.भेड़ाघाट में धुआं सी धारा
पर्यटकों का है आधारा
मैहर नगरी यहीं बसी है
भक्ति की धारा निकसी है
****
6.यहां विराजी शारद माता
महिमा इनकी जग है गाता
पावन धाम यहां चित्रकूट
राम नाम की मची है लूट
****
7.कामदगिरि का धाम सलोना
राम नाम गुंजित हर कोना
खजुराहो की कलाप्रतिम हैं
विश्व धरोहर में शामिल हैं

****
देख यहां की चित्रकलाएं
अंगुली दांतों तले दबाएं
ओमकारेश्वर और महेश्वर
पावन धाम यहां बागेश्वर
****
प्रदीप धीरेंद्र से संत हैं जाए
भगवत भक्ति से सिद्धि हैं पाए
सारे जग में भक्ति बिखेरे
भक्ति कथा के संत चितेरे
****
बात बताऊं एक मैं सांची
यहां बसा स्तूप है सांची
हिंदी सिंधी और बघेली
भाषा मनहर है बुंदेली
****
वरुणेश फसले नहलाता
यह प्रदेश सोया कहलाता
प्रकृति के उपहार से गढ़ी
परम मनोरम ठौर पचमढ़ी
****
12.ताल नदी और जल के प्रपात
दुर्गा किलों की क्या ही बात
बगिया यह कविता बसंत की
माखन परसाई दुष्यंत की
****
13अति सुंदर अरु भव्य विशाला
विंध्य सतपुड़ा पर्वतमाला
उपजाऊ है यहां की माटी
चंबल सोन बरदहा घाटी
****
अवंतिका है कुंभ की नगरी
शिप्रा छलकी अमृत गगरी
कालों के भी जो हैं काल
यहां विराजे हैं महाकाल
****
महाकाल का लोक सुहावन
है मनभावन है अति पावन
कालिदास की कविता निखरी
जनमानस में आकर बिखरी
****
रीवा नगरी शेरों वाली
पन्ना नगरी हीरो वाली
भेड़ाघाट ओरछा मांडव
गुफा उदयगिरि माडा पांडव
****
17.तपोभूमि यह फेंकू ऋषि की
गुरु सांदीपनि महा ऋषि की
सांदीपनि कुटिया अभिरामा
पढ़े यहां पर कृष्ण सुदामा
****
18.यहां गीत की लता है विकसी
तानसेन की तान मधुर - सी
पूजा योग्य खेत खलिहान
यहां कृषि कर्मण सम्मान
****
सबसे साफ स्वच्छ जो ठौर
प्रथम नाम में है इंदौर
रितु जलवायु सभी अनुकूला
यहां नहीं कुछ भी प्रतिकूला
****
20.अमर हैं आज तलक चंद्रशेखर
अपने प्राण देश को देकर
वीर भूमि यह मध्यप्रदेश
कण कण वंदन करे दिनेश
****
दोहा :
सदा सतत बढ़ता रहे, मध्य प्रदेश का मान
कलम सदा करती रहे, इसका ही गुणगान
****
लेखक -दिनेश गुप्ता मकरंद
सतना (पड़रौत)

बुद्ध सभागार में लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल जी की जयंती एवं पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की पुण्य तिथि मनाई गई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पिपलानी स्थित इंटक कार्यालय के बुद्ध सभागार में देश के प्रथम गृह मंत्री लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल जी की जयंती एवं पूर्व प्रधानमंत्री आयरन लेडी इंदिरा गांधी की पुण्य तिथि मनाई गई। दोनों देश के महान हस्तिया है ।सरदार बल्लभ भाई पटेल अगर लौह पुरुष थे तो इंदिरा गांधी आयरन लेडी थी।सरदार पटेल ने 565 रियासतो को एक कर देश की एकता और अखंडता को मजबूत किया।सरदार पटेल जननायक थे।
देश की आजादी में सरदार पटेल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।सरदार पटेल इंटक यूनियन के संस्थापक थे और हम सबको गर्व है की हम सब इंटक के सिपाही है।वही इंदिरा गांधी अमेरिका की धमकियो को नजर अंदाज करते हुए युद्ध में पाकिस्तान को धूल चटाकर पकिस्तान के दो टुकड़े किये थे।इंदिरा गांधी जी ने सिक्किम को देश में मर्ज कर इतिहास के साथ साथ भूगोल भी बनाया है।इंदिरा गांधी जी ने बैंको का राष्ट्रीकरण किया।कोयला खदानों में काम करने वाले मजदूरो की दशा अत्यंत निंदनीय थी।इंदिरा गांधी ने कोल खदानों का राष्ट्रीकरण कर मजदूरो श्रमिको के शोषण को ख़त्म किया है।इंदिरा गांधी जी ने नेहरू जी की सोच को आगे बढ़ाते हुए पब्लिक सेक्टर के कारखानो का निर्माण किया है। सभा में महामंत्री अजीत गोंड एवं कोषाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी सी आर नामदेव, मीडिया प्रभारी, बुधमान सिन्हा ने दोनों महान हस्तियों के उपलब्धियों पर अपने वक्तव्य रखे। और रामभुवन विश्वकर्मा ने सभा में आये कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर इंटक के महामंत्री अजित गोंड कोषाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी मीडिया प्रभारी सी आर नामदेव ,फजल खान प्रदीप मालवीया , बुधमान सिन्हा, विजय नीलकंठ नीरज विष्वकर्मा रणजीत चन्द्रावत रामभुवंन विष्वकर्मा, सुरेश मेहरा, चन्द्रमणी,पीपी गिरी,जीतेन्द्र मौर्या,अनिल हटीले, आर डी राव आदि कई यूनियन के पदाधिकारी मौजूद थे।

पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता दौड़ का आयोजित

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल, भोपाल के स्पोटर्स क्लब में लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता दौड़ का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री प्रदीप कुमार उपाध्याय, महाप्रबंधक एवं इकाई प्रमुख, बएचईएल, भोपाल उपस्थित थे।
इस अवसर पर श्री टी यू सिंह, महाप्रबंधक (मा.सं.); सभी महाप्रबंधकगण; डीआरओएस; यूनियनों क आरिफ अहमद सिद्दीकी, अपर महाप्रबंधक (मा. सं.) सहित अन्य अधिकारीगण तथा भारी संख्या में कर्मचारीगण उपस्थित थे। युवा मामले एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार (खेल विभाग) के निर्देशानुसार, फिट इंडिया फ्रीडम रन 6.0, दिनांक 02 से 31 अक्टूबर 2025 तक "स्वच्छता और स्वास्थ्य" विषय पर आयोजित किया गया । 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' पहल का उद्देश्य दौड़ने, पैदल चलने और संबंधित फिटनेस गतिविधियों में व्यापक भागीदारी के माध्यम से शारीरिक उपाध्याय ने उपस्थित जनसमुदाय को राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ दिलाते हुए कहा कि बीएचईएल, भोपाल इकाई में दिनांक 2 अक्टूबर, 2025 से फिट इंडिया अभियान के तहत "स्वच्छता एवं स्वास्थ्य" से संबंधित विभिन्न फिटनेस तथा कई खेलों का आयोजन किया गया । उन्होंने बताया कि प्रति वर्ष एकता दिवस सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिन्हें हम लौह पुरूष के नाम से भी जानते हैं । देश की अखण्डता में उनकी जो भूमिका रही है वह हम सबके लिए एक मिसाल है । अंत में उन्होंने सभी को पुनः राष्ट्रीय एकता दिवस की शुभकामनाएं दी
इस अवसर पर श्री सिंह ने कहा कि हमें इसी उत्साह के साथ अपने कार्य क्षेत्र में भी कार्य करते हुए संस्थान को आगे बढ़ाना है। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन उपेन्द्र कुमार सिंह, अपर महाप्रबंधक (प्रचार एवं जनसंपर्क) ने किया।

शाहपुरा जैन मंदिर मे भगवान सिद्ध की आराधना, कर्मों के बंधन से मुक्त होने परिणामों में सरलता आवश्यक : मुनि निर्वेग सागर महाराज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर शाहपुरा में मुनि निर्वेग सागर महाराज सा संघ के सानिध्य में श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान में भगवान की सिद्ध की आराधना में लीन श्रद्धालु,, भक्तों द्वारा भगवान पारसनाथ का अभिषेक कर अष्ट द्रव्य से पूजा आराधना की गई जिनालय परिसर में बने मंडल पर अर्ध अर्पित किए,,, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया समिति के अध्यक्ष दीपचंद जैन सचिव अमित मोदी सहीत सभी पदाधिकारी द्वारा मुनि संघ के कर कमलों में शास्त्र भेंट किए गए,, मुनि निर्वेग सागर महाराज ने आशीर्वचन में कहा संसार में सबसे बड़ा कष्ट का बंधन कर्मों का बंधन होता है बंधन को खत्म करने के लिए आचरण में सरलता मन में निर्मलता होनी चाहिए और सच्चे मन से प्रभु की भक्ति की जाना चाहिए धार्मिक अनुष्ठानों के साथ जीवन में सबसे पहले अहिंसा करुणा और जीव दया का पालन हमेशा करना चाहिए जरूरत पड़े तो अहिंसा के लिए सब कुछ छोड़ने के लिए सदैव तैयार होना चाहिए विधान के प्रमुख पात्रों द्वारा विधान मंडल पर अर्ध अर्पित किए गए प्रमुख पात्रों में सर्वश्री सौधर्म इंद्र – प्रोफेसर एन.सी. जैन राजा श्रीपाल शरण बजाज सरिता बजाज अमित-संगीता मोदी एस.एम. जैन शशि जैन, संतोष जैन रजनी जैन भरत चक्रवर्ती जिनेंद्र जैन समता जैन कुबेर – अभय जैन सरोज जैन महा यज्ञनायक संतोष जैन, यज्ञनायक आदिश संध्या जैन ईशान इंद्र सुरेश आशा जैन सनत इंद्र – पुष्पेंद्र जैन सनत चंद्र – जिनेंद्र जैन, बाहुबली राजेश जैन ध्वजारोहण कर्ता – संजय जैन, शामिल हैं।

अग्निवीरों का अग्निपथ!

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को पत्र भेज कर कहा है कि वे प्राइवेट सुरक्षा एजेंसियों को रिटायर्ड अग्निवीरों की भर्ती के लिए राजी करें। खासकर उन एजेंसियों को, जिनकी सेवाएं सरकारी विभाग, बैंक आदि लेते हैं। नरेंद्र मोदी सरकार ने जब 'अग्निपथ' योजना लागू की, तभी ये चेतावनी दी गई थी कि इसके तहत भर्ती अग्निवीर जब रिटायर्ड होंगे, तो भारतीय समाज के लिए वे एक बड़ी चिंता का कारण बनेंगे। सरहदों की हिफाजत में युवा उम्र के चार साल गुजारने के बाद जब बाकी जिंदगी में उन्हें सचमुच के अग्निपथ से गुजरना होगा। अब ये आशंका सच होती दिख रही है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को पत्र भेज कर कहा है कि वे प्राइवेट सुरक्षा एजेंसियों को रिटायर्ड अग्निवीरों की भर्ती के लिए राजी करें। खासकर उन एजेंसियों को, जिनकी सेवाएं सरकारी विभाग, बैंक आदि लेते हैं। इसके लिए प्राइवेट सिक्युरिटी एजेंसी रेगुलेशन ऐक्ट का सहारा लेने को कहा गया है। इस कानून में प्रावधान है कि प्राइवेट सुरक्षा एजेंसियां सेना, पुलिस और सशस्त्र बलों से रिटायर्ड कर्मियों को भर्ती में तरजीह दे सकती हैं। मगर ध्यान में रखने की बात है कि थल, वायु एवं जल सेनाओं से रिटायर्ड कर्मियों को पेंशन, इलाज, कैंटीन आदि की सेवाएं ताउम्र मिलती हैं, जबकि अग्निवीरों को चार साल की नौकरी के बाद एकमुश्त 11.71 लाख रुपये देकर विदा करने का प्रावधान है। केंद्र ने 25 फीसदी अग्निवीरों को 15 और साल के लिए सेना में रखने तथा अपने तहत आने वाले अर्धसैनिक बलों में उनके लिए आरक्षण का प्रावधान किया है। ऐसा ही प्रावधान राज्य सरकारों से भी पुलिस एवं सशस्त्र बलों में करने को कहा गया है। मगर ये सब आश्वासन हैं, गारंटी नहीं। इसलिए अंदेशा है कि ज्यादातर अग्निवीरों का भविष्य प्राइवेट सुरक्षा एजेंसियों में अस्थायी नौकरी करना होगा। ये सवाल पहले भी उठा था और आज भी प्रासंगिक है कि क्या इसका खराब असर भारतीय सीमाओं के रक्षकों के मनोबल पर नहीं पड़ेगा? अग्निपथ योजना संभवतः भारत के रक्षा खर्च पर बढ़े दबाव के कारण शुरू की गई। वन रैंक वन पेंशन योजना ने रक्षा बजट के बहुत हिस्से को हड़प लिया। नतीजा एक ऐसी योजना के रूप में सामने आया है, जिसे अनेक विशेषज्ञ राष्ट्रीय सुरक्षा से एक तरह का समझौता मानते हैं। यह गंभीर चिंता का पहलू है।

मुस्लिम वोट इस बार चौंकाएगा!

बिहार में किसी पार्टी ने मुसलमानों को उनकी आबादी के अनुपात में टिकट नहीं दी है। मुस्लिम और यादव समीकरण पर चुनाव लड़ने वाली लालू प्रसाद की पार्टी राजद ने 18 फीसदी आबादी वाले मुसलमानों को 18 सीटें दी हैं, जबकि 14 फीसदी आबादी वाले यादवों को 52 सीटें दी हैं। राजद की सहयोगी कांग्रेस ने भी 10 मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं। उधर एनडीए में इस बार मुस्लिम मतदाताओं से मोहभंग है तभी गठबंधन की ओर से 243 में से सिर्फ पांच सीटों पर मुस्लिम उम्मीदवार उतारे गए हैं। पिछले चुनाव में 11 मुस्लिम उम्मीदवार देने वाले नीतीश कुमार ने भी इस बार सिर्फ चार उम्मीदवार दिए हैं। प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी और असदुद्दीन ओवैसी की ऑल इंडिया एमआईएम ने आबादी के अनुपात में मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं। इसका मतलब है कि मुस्लिम वोट के तीन दावेदार इस बार चुनाव में हैं। राजद के नेतृत्व वाले महागठबंधन के अलावा ओवैसी की पार्टी एमआईएम और प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज। सबको पता है कि मुस्लिम मतदाताओं के वोट करने का एक ही पैमाना है। पूरे देश में वही पैमाना काम करता है। बिहार में भी सन 2000 के चुनाव से अभी तक मुस्लिम उसी को वोट करते हैं, जो भाजपा को हरा रहा हो। सीमांचल के इलाके के चार जिलों में, जहां मुस्लिम आबादी करीब 50 फीसदी है और सभी पार्टियों के लगभग सभी उम्मीदवार मुस्लिम होते हैं वहां जरूर मुसलमान इस पैमाने को तोड़ कर वोट करते हैं। वैसे भी इस बार कहा जा रहा है कि एनडीए जीता तो भाजपा अपना मुख्यमंत्री बनाने का प्रयास करेगी। ऐसे में समय में भला मुस्लिम वोट क्यों बंटेगा? जाहिर है भाजपा को रोकने के लिए इस बार मुस्लिम वोट पूरी तरह से महागठबंधन के साथ एकजुट रहने का नैरेटिव बना हुआ है। फिर भी मुस्लिम वोट बिखरता दिख रहा है और इसलिए उस पर नजर रखने की जरुरत है। यह बहुत दिलचस्प है कि मुस्लिम वोट बिखर सकता है और ऐसा होने के कई कारण हैं। पहला कारण तो यह धारणा है कि महागठबंधन इस बार भी एनडीए को नहीं रोक पाएगा। मुसलमानों को लग रहा है कि जब एनडीए को रोकना मुश्किल है तो क्यों नहीं वे अपने विधायकों की संख्या बढ़ाएं और अपना नेतृत्व तैयार करें। दूसरा कारण यह है कि मुस्लिम और यादव समीकरण बनाने वाले राजद ने ज्यादा आबादी वाले मुसलमानों को यादवों के मुकाबले एक तिहाई सीटें दीं। तीसरा कारण यह है कि तेजस्वी यादव खुद मुख्यमंत्री पद के दावेदार घोषित हो गए और ढाई फीसदी मल्लाह आबादी वाले नेता मुकेश सहनी को उप मुख्यमंत्री घोषित करा दिया लेकिन 18 फीसदी वाले मुसलमानों में से उप मुख्यमंत्री की घोषणा नहीं कराई। विवाद बढ़ने पर कहा गया कि मुस्लिम और दलित डिप्टी सीएम घोषित होंगे।

जीवित रहने की बहस में सकंल्प कब!

क्या जलवायु चिंता से शुरू कोप (COP) सम्मेलन कुछ मायने रखता हैं? या सिर्फ बस एक नौटंकी है? यह प्रश्न अब स्थाई है पर बेचैन करने वाला, आवश्यक भी, मगर अनुत्तरित। क्या COP सम्मेलन से तनिक भी कुछ बदलता हैं? फिलहाल ब्राज़ील के बेले (Belm) में COP30 की तैयारी हो रही है। सो "पार्टियों का सम्मेलन", एक और संस्करण, वायदों का एक और जमावड़ा और शोक में डूबी धरती के बीच नए फोटो-ऑप्स। कभी COP एक उद्देश्य के साथ शुरू हुआ था, एक आदर्श प्रयोग के रूप में। यह वह दुर्लभ मंच था जहाँ अमीर और ग़रीब, लोकतांत्रिक और अधिनायकवादी, सभी देशों के नेता एक साथ बैठते थे और पृथ्वी के भविष्य पर विचार होता था क्योंकि पर्यावरण, वातावरण की कोई सीमा नहीं है। न ही समुद्रों के बढ़ते तापमान की कोई विचारधारा। जलवायु परिवर्तन वह संकट था जिसने मनुष्य को साफ बता रखा है कि राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठो, क्योंकि पूरी पृथ्वी के अस्तित्व का प्रश्न है। पर जैसे-जैसे धरती और गर्म, तथा ठंडी, और भीगी व सूखी होती गई, जैसे-जैसे बाढ़ें गहरी और जंगल राख में बदलते गए, COP की भाव-भंगिमा भी बदली। अब वह रूपांतरण, कार्य योजनाओं का नहीं बल्कि दिखावे व प्रदर्शन का मंच बन गया है। महत्त्वाकांक्षाओं, लफ्फाजी से भरा सम्मेलन जबकि क्रियान्वयन से खाली। मतलब वादों, वचनबद्धताओं का रंगमंच, जहाँ ताली ज्यादा बजती है, जवाबदेही कम। और फिर भी, हम हर साल सम्मेलन के लिए जुट आते हैं। इस नवंबर, 6 से 21 तारीख तक, दुनिया बेलें में अमेज़न के मुहाने पर जुटेगी । शायद कोई और शहर जलवायु कूटनीति के विरोधाभासों को इतनी स्पष्टता से नहीं दिखाता। यह सम्मेलन जो दुनिया के सबसे नाज़ुक पारिस्थितिक तंत्र के बीच हो रहा है, पर उसी तंत्र को काटकर बनाए गए ढांचे पर। राज्य सरकार ने नेताओं के स्वागत के लिए एक नई चार लेन की सड़क बनाई है, जिसके लिए हज़ारों एकड़ संरक्षित वर्षावन साफ़ कर दिए गए। सरकार इसे "सस्टेनेबल" कहती है। संरक्षणवादी इसे सही नाम देते हैं संरक्षण के नाम पर विनाश। इस बीच, बढ़ती होटल दरों ने ग्लोबल साउथ के कई प्रतिनिधिमंडलों के लिए रहना लगभग असंभव बना दिया है। बेलें के कई मज़दूर इलाकों को खाली कराया जा रहा है ताकि राजनयिकों और लॉबिस्टों के काफ़िले को जगह मिले। सम्मेलन शुरू होने से पहले ही इसकी दरारें दिखने लगी हैं, कौन बोल सकता है, और किसकी आवाज़ दबा दी जाएगी। और इन हरे बैनरों के पीछे छिपा है एक गहरा, खतरनाक इंकार, विज्ञान का नहीं, आर्थिक परिणामों का। अब "यह सच नहीं" का इनकार नहीं रहा, बल्कि "यह पूँजी को नहीं छेड़ सकता" वाला इनकार है। इस साल का COP "ग्लोबल साउथ COP" कहा जा रहा है, पहला सम्मेलन जो अमेज़न में हो रहा है, जिसे "धरती के फेफड़े" कहा जाता है। प्रतीकात्मक रूप से यह समावेश का वादा करता है, पर समावेश समानता नहीं है। क्योंकि जब ग्लोबल साउथ पहुंचेगा, कर्ज़, सूखा और जलवायु असमानता के बोझ के साथ, तो ग्लोबल नॉर्थ आएगा आंकड़ों और पॉवरपॉइंट्स के साथ। उनकी भाषा होगी प्रतिशतों में, लोगों में नहीं। उनके सूत्र होंगे "नेट ज़ीरो बाय 2050", जबकि दक्षिण के लिए सवाल है "2025 तक कौन ज़िंदा रहेगा? वे बोलेंगे "ऑफ़सेट मार्केट्स" और "क्लाइमेट फ़ाइनेंस" की भाषा में, ऐसे सौदों में जो उत्तर को सुकून खरीदने देते हैं जबकि दक्षिण अपने जंगल, अपने तट, अपनी साँसें खोता है। उनकी एक्सेल शीट्स चमकेंगी, पर वे इतिहास नहीं दिखाएंगी, सदियों की लूट, उपनिवेशवाद, औद्योगिक लालच का इतिहास। उत्तर गणना करता है "गीगाटन" में, दक्षिण गणना करता है "बर्बाद फ़सलों, डूबे खेतों और प्रवासी मज़दूरों" में। COP30 में फिर "फ़्रंडिंग फ़ॉर्मूले", पर मुआवज़े की बात नहीं होगी। वह कहेगा "अनुकूलन ज़रूरी है", पर यह नहीं बताएगा, कौन किसके अनुकूल हो? और विडंबना यह कि दक्षिण के कई छोटे देश, जो सबसे अधिक जलवायु त्रासदियों से जूझ रहे हैं, शायद इस बार सम्मेलन तक पहुँच भी न पाएं, क्योंकि बेलें के होटल अब उनके लिए भी महंगे हो चुके हैं। तो सवाल उठता है, अगर पहुँच ही विशेषाधिकार है, तो फिर आवाज़ कहाँ से आएगी? और फिर भी, इसी असंतुलन में अवसर छिपा है। भारत चाहे तो सिर्फ़ भाग नहीं ले, नेतृत्व करे। आख़िरकार, यह वही भारत है जिसने खुद को "विश्वगुरु" कहा है, दुनिया का नैतिक पथप्रदर्शक। पिछले साल G20 में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत को "ग्लोबल साउथ की आवाज़" के रूप में पेश किया था। पर अगर यह नेतृत्व सिर्फ़ भाषण नहीं, बल्कि दृष्टि बनना है, तो हमें वह कहना होगा जो बाकी नहीं कह रहे, कि क्लाइमेट एड अक्सर छलावा है। "ग्रीन फ़ाइनेंस" एक नए कार्बन उपनिवेशवाद में बदल रहा है, सततता की भाषा में लिपटा, पर असमानता की मुद्रा में व्यापार करता हुआ। नेतृत्व का अर्थ सिर्फ़ मंच पर नारे नहीं, बल्कि उन व्यवस्थाओं को चुनौती देना है जो प्रदूषण से मुनाफ़ा कमाती हैं जबकि ग़रीब डूबते, जलते और दम तोड़ते हैं। अगर भारत "विश्वगुरु" बनना चाहता है, तो शुरुआत अपने घर से करनी होगी। काग़ज़ी जंगल नहीं, असली हरियाली से। बायोफ्यूल के वादे नहीं, बसें चलाने से। नेट-ज़ीरो के नारे नहीं, उत्सर्जन नियंत्रण से। घोषणाओं की परिषदें नहीं, रीढ़वाले शासन से। नेतृत्व का पहला कर्तव्य है, अपने ही गलियारों का धुआँ साफ़ करना। कोयला लॉबी से, "ग्रीनवॉशिंग" की फ़ाइलों से, और उस शांत इंकार से जो "विकास" का नाम लेकर चल रहा है। जलवायु संकट अब गिनती बन चुका है, शरीरों की गिनती। WHO और Lancet Countdown की ताज़ा रिपोर्ट बताती हैः बढ़ता वैश्विक तापमान अब हर मिनट में एक जान ले रहा है। शब्दशः। पिछले वर्ष 5.46 लाख ताप-संबंधी मौतें दर्ज की गईं — 1990 के दशक से 23% की वृद्धि। जंगलों की आग से लेकर डेंगू के फैलाव तक, निर्माण स्थलों पर हीटस्ट्रोक से लेकर सूखे खेतों तक, यह अब धीमी त्रासदी नहीं, तेज़ी से बढ़ता प्रलय है। फिर भी, सरकारें अब भी जीवाश्म ईंधन पर स्वास्थ्य बजट से ज़्यादा खर्च करती हैं। सिर्फ़ 2023 में यह सब्सिडी 956 अरब डॉलर तक पहुँची, जबकि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश अब भी उस सहायता का इंतज़ार कर रहे हैं जो या तो देर से आती है या शर्तों में बंधी होती है, किसी और की मुद्रा में, किसी और की मंशा से। अगर हर मिनट मरती एक ज़िंदगी भी कार्यवाही नहीं जगाती, तो फिर क्या करेगा? शायद एक और COP नहीं। शायद एक और प्रेस रिलीज़ नहीं। शायद एक और मंच नहीं जो "क्लाइमेट सिंबलिज़्म" में लिपटा हो। और फिर भी, दुनिया लौटती है। क्योंकि विरोधाभासों के बावजूद, COP ही वे आख़िरी मंच हैं जहाँ हर देश — अमीर या ग़रीब — अभी भी जीवित रहने की बहस में बैठता है। जहाँ ग्लोबल साउथ के पास अभी भी एक माइक है, कमज़ोर, क्षणिक, पर मौजूद। क्योंकि अभिनय भी कभी-कभी दबाव बनाता है। और मंच भी कभी-कभी इतिहास की दिशा बदल देता है। तो क्या COP मायने रखते हैं? हाँ, अगर हम उन्हें मायने देने की हिम्मत करें। क्योंकि यह अब भी वह मंच है जहाँ इतिहास पूरा नहीं हुआ। जहाँ शक्तिशाली देशों को, भले क्षणभर के लिए, अपने कर्मों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि जलवायु संकट अब भविष्य का नहीं, वर्तमान का प्रश्न है, कौन बचेगा, कौन नहीं। और यही आज की बातचीत का असली केंद्र है। COP तभी मायने रखेंगे, जब उनके बाद कोई, कहीं, वास्तव में, हल्की साँस ले सके। न सिद्धांत में, बल्कि सच्चाई में। जब वे वार्षिक बहाने नहीं, नैतिक निर्णय बन जाएँ।

-श्रुति व्यास

बिहार में वादों की विश्वसनीयता पर वोट!

शकील अख़्तर

तेजस्वी प्रण में बिहार की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को एड्रेस किया गया है। हर घर में एक सरकारी नौकरी। बहुत बड़ा वादा है। बिहार बेरोजगारी में भी देश में अव्वल है। प्रति व्यक्ति आय भी सबसे कम है और सबसे ज्यादा पलायन भी यहीं से होता है। इसलिए तेजस्वी का नौकरी का हर घर में एक सरकारी नौकरी का वादा यहां सबसे ज्यादा क्लिक कर रहा है। बिहार में नीतीश कुमार ने वंदोपाध्याय आयोग बनाया था। मगर अब उसे लागू करने की घोषणा महागठबंधन का प्रमुख घटक दल सीपीआई (माले) कर रहा है। मंगलवार को महागठबंधन का घोषणा पत्र तेजस्वी प्रण के नाम से जारी हुआ। मगर उससे पहले माले अपना अलग घोषणा पत्र जारी कर चुका है। माले के प्रमुख वादे भूमिहीनों का भूमि आवंटन का उसमें जिक्र नहीं है। माले ने कांग्रेस और आरजेडी से इस मुद्दे को शामिल करने की मांग की थी। मगर एकदम से भूमिहीनों के साथ पूरी तरह खड़े होने को आरजेडी और कांग्रेस इस समय तैयार नहीं हो पाए। बिहार में भूमि ही सबसे बड़ी समस्या है। देश का सबसे ज्यादा भूमिहीन बिहार में ही है। यहां जो जातीय युद्ध हुए। रणवीर सेना बनी उन सबके पीछे भूमि समस्या

ही रही है। बिहार में लगभग 60 प्रतिशत लोग भूमिहीन हैं। और दलितों में तो लगभग 86 प्रतिशत के पास कोई जमीन नहीं है। दूसरी तरफ दस प्रतिशत ताकतवर लोगों के पास पचास प्रतिशत से ज्यादा जमीन है। जो एक एक के पास हजारों एकड़ में है। बाकी करीब 30 प्रतिशत के पास जमीन तो है मगर दो बीघे से कम। इसी असमान भूमि वितरण को देखते हुए नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री बनते ही 2006 में वंदोपाध्याय आयोग का गठन किया था। 2008 में इसकी रिपोर्ट आ गई। मगर नीतीश ने इसे लागू करने में कभी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हां, भाजपा को बीच बीच में डराने के लिए वे इसका जिक्र जरूर कर देते थे। भाजपा के लिए भूमि सुधार (लेंड रिफार्म) एक ऐसा अवरोधक है कि जहां भी यह हुआ वह कभी सरकार नहीं बना पाई। पूरी तरह देश में यह अभी तक तीन राज्यों में लागू हुआ है। जम्मू कश्मीर, पश्चिम बंगाल और केरल। और तीनों ही जगह भाजपा सफल नहीं हो पा रही। माले ने भी अपने घोषणापत्र में उसे उस तरह लागू करने की बात नहीं कही है जिससे तनाव बढ़े। वह महागठबंधन में है जिसमें आरजेडी और कांग्रेस ने बड़े भूपतियों को भी टिकट दिए है। मगर बिहार की मूल समस्या को लाइम लाइट में रखने के लिए उसने ग्रामीण क्षेत्र के भूमिहीनों को 5 डिसिमल और शहरी क्षेत्र के भूमिहीन को 3 डिसिमल जमीन देने का वादा किया है। इसके अलावा उसका जो दूसरा बड़ा वादा है वह है शिक्षा पर बजट का दस प्रतिशत खर्च करना। अगर यह हो गया तो बिहार में निरक्षरता पूरी तरह खत्म हो जाएगी। अभी बिहार में साक्षरता दर देश में सबसे कम है। केवल 61. 8 प्रतिशत। सबसे उपर केरल है। जहां शत प्रतिशत लोग साक्षर हैं। मगर वहां के हर चुनाव में जाकर बीजेपी के नेता उसे यूपी और बिहार जैसा बनाने का वादा करते हैं। नतीजा यह होता है कि श्रीधरन जैसा अन्तरराष्ट्रीय ख्याति का टेक्नोक्रेट जो मेट्रोमेन के नाम से मशहूर है वह भी बीजेपी के टिकट से चुनाव हार जाता है। घोषणापत्र जिसका नाम तेजस्वी प्रण है वह भी अच्छा है। और उसमें बिहार की सामने दिखाई दे रही सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को एड्रेस किया गया है। हर घर में एक सरकारी नौकरी। बहुत बड़ा वादा है। ऐसा ही दूसरा बड़ा वादा जीविका दीदियों को स्थाई करना। सरकारी कर्मचारी का दर्जा देना और सीधे तीस हजार रुपए महीना देना। जीवीका दीदी की संख्या बिहार में करीब 9 लाख है। यह नौकरी का वादा बिहार में बहुत बड़ा है। और तेजस्वी की इस क्षेत्र में भारी विशवसनीयता है। उप मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने पांच लाख सरकारी शिक्षक नियुक्त करने का कीर्तिमान रचा है। और वैकेन्सी निकलाने से लेकर परीक्षा रिजल्ट नियुक्ति कहीं भी एक भी गड़बड़ी की शिकायत नहीं मिली। नहीं तो बीजेपी के अधिकांश राज्यों में पेपर लीक, परीक्षा कैसिंल होना, रीजल्ट आ जाए तो नियुक्ति नहीं होना अब आम समस्या बन गई है। बिहार बेरोजगारी में भी देश में अव्वल है। प्रति व्यक्ति आय भी सबसे कम है और सबसे ज्यादा पलायन भी यहीं से होता है। इसलिए तेजस्वी का नौकरी का हर घर में एक सरकारी नौकरी का वादा यहां सबसे ज्यादा क्लिक कर रहा है।

आंकड़े छिपाने से हकीकत नहीं बदलती!

हर साल नवंबर, दिसंबर में दिल्ली में हिंदी फिल्मों का यह गाना खूब चर्चा में रहता है कि 'आंखों में जलन, सीने में तूफान सा क्यूं है, इस शहर में हर शख्स परेशान सा क्यूं है'। इस साल भी ऐसा ही है। आंखों में जलन है, गले में खराश है, सीने में तूफान सा है, अस्पतालों में सांस के मरीजों की संख्या बढ़ रही है लेकिन फर्क यह है कि इस बार सरकार के आंकड़े बता रहे हैं कि हवा की गुणवत्ता ज्यादा खराब नहीं हुई है। दिल्ली में नंगी आंखों से हवा प्रदूषित दिख रही है और लोग उसे महसूस कर रहे हैं। यह साफ दिख रहा है कि वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई 'गंभीर श्रेणी' में है या चार सौ से कम नहीं है। लेकिन सरकार कह रही है कि एक्यूआई पहले 'बेहद खराब श्रेणी' में थी लेकिन अब सुधार हुआ है और अब वह 'खराब श्रेणी' में आ गई है। इसका मतलब है कि एक्यूआई तीन से आसपास थी, जो अब दो सौ या उससे नीचे आ गई है। वास्तविकता और आंकड़ों का यह फर्क इसलिए आय़ा दिख रहा है क्योंकि दिल्ली में अब भाजपा की सरकार है। 27 साल के बाद सत्ता में लौटी भाजपा की सरकार यह साबित करने में लगी है कि उसने नौ महीने के ही अपने राज में हवा की गुणवत्ता सुधार दी है। हालांकि दिल्ली सरकार अपनी पोल खुद ही खोल रही है। एक तरफ उसकी एजेंसियां कह रही हैं कि वायु गुणवत्ता में कभी भी बहुत ज्यादा खराबी नहीं आई है। उसने 'खराब श्रेणी' का दावा किया है और ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान यानी ग्रैप का पहला चरण लागू किया है। लेकिन दूसरी ओर सरकार खुद ही ऐसे उपायों को लागू कर रही है, जो प्रदूषण बढ़ने पर ग्रैप के दूसरे चरण में लागू किए जाते हैं। मिसाल के तौर पर दिल्ली में भाजपा के नेतृत्व वाले नगर निगम ने बुधवार, 29 अक्टूबर को पार्किंग शुल्क दोगुना कर दिया। ग्रैप का दूसरा चऱण लागू करने पर यह किया जाता है। इसी तरह दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने अपने फेरे 30 फीसदी बढ़ाने का ऐलान कर दिया। प्रदूषण बढ़ने पर ही सार्वजनिक परिवहन की सेवाओं में बढ़ोतरी की जाती है। ऐसे ही एक नवंबर से बीएस छह से नीचे के व्यावसायिक वाहनों का दिल्ली में प्रवेश रोकने की घोषणा कर दी गई है। सो, सरकार ऐसे उपाय कर रही है, जिससे लग रहा है कि दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ा है लेकिन दूसरी ओर वह इस बात को स्वीकार

करने के लिए राजी नहीं है। उलटे ऐसे आंकड़े पेश कर रही है, जिससे लग रहा है कि दिल्ली में सब कुछ ठीक है। इसी तरह दिल्ली सरकार ने कृत्रिम बारिश कराने का भी प्रयास किया। आईआईटी कानपुर के साथ मिल कर इसके दो ट्रायल हुए। हालांकि सरकार और आईआईटी दोनों को पता था कि हवा में नमी 10 फीसदी से ज्यादा नहीं है और 50 फीसदी से कम नमी होने पर क्लाउड सीडिंग काम नहीं करता है। फिर भी करीब दो करोड़ रुपए खर्च करके क्लाउड सीडिंग की गई। इसका कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि बारिश नहीं हुई। तब सरकार ने यह दावा शुरू कर दिया कि बारिश भले नहीं हुई है लेकिन इससे वायु प्रदूषण कम करने में मदद मिली है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने दावा किया कि हवा में मौजूद खतरनाक धूल कणों में से एक पीएम 10 में 42 फीसदी की कमी आई है। हालांकि यह ट्रायल करने वाले आईआईटी का कहना है कि पीएम 10 में छह से 10 फीसदी तक की कमी आई है। सोचें, सरकार क्या बढ़ा चढ़ा कर पीएम 10 कम होने का दावा कर देगी तो लोगों को प्रदूषण से राहत मिल जाएगी? ऐसा लग रहा है कि दिल्ली की सरकार हर जगह आंकड़े छिपा कर हकीकत बदलने की कोशिश कर रही है। इस बार दिल्ली सरकार ने सुप्रीम कोर्ट जाकर दिल्ली में पटाखों की बिक्री शुरू कराई। अदालत ने हालांकि तीन दिन तक ग्रीन पटाखे बेचने की इजाजत दी थी लेकिन कई दिन तक पटाखे बिके और दिवाली पर खूब पटाखे चले। फिर भी दिवाली के अगले दिन कहा गया कि वायु प्रदूषण नहीं बढ़ा है। दावा किया गया कि एक्यूआई तीन सौ आसपास रहा यानी 'बेहद खराब श्रेणी' तक ही हवा की क्वालिटी बिगड़ी। हालांकि बाद में खबरें आईं कि दिवाली की रात को जिस समय एक्यूआई सबसे ज्यादा बिगड़ी उस समय के आंकड़े नहीं जोड़े गए। यानी दिवाली के अगले दिन का एक्यूआई पीक पॉल्यूशन के आंकड़ों के बगैर निकाला गया। सोचें, आंकड़ों के साथ ऐसी धोखाधड़ी कोई जिम्मेदार सरकार कैसे कर सकती है? अभी जो भी प्रदूषण है उसके लिए दिल्ली सरकार ने सारा ठीकरा पंजाब पर फोड़ दिया है। जैसे आम आदमी पार्टी की सरकार भाजपा शासित राज्यों में पराली जलाए जाने को दिल्ली के प्रदूषण के लिए जिम्मेदार बताती थी वैसे ही भाजपा की दिल्ली सरकार पंजाब की आप सरकार को जिम्मेदार ठहरा रही है। कहा जा रहा है कि पंजाब में पराली जलाने की घटनाओं के कारण दिल्ली में प्रदषण बढ़ा है। हवा के साथ साथ यमुना की सफाई के मामले में भी दिल्ली सरकार का यही रवैया है। दिल्ली में सरकार बनने के बाद पहले दिन से दिल्ली सरकार और भाजपा नेताओं ने यमुना में सफाई का कथित अभियान शुरू किया। ड्रेजिंग करने वाली मशीनें लगा दी गईं। लेकिन हकीकत यह है कि छठ के समय तक यमुना के पानी में रत्ती भर सुधार नहीं हुआ। कहीं कहीं सफाई हुई लेकिन पानी में ऑक्सीजन का स्तर नहीं बढ़ा और पहले की तरह झाग बनती रही। झाग हटाने के लिए उसी केमिकल का इस्तेमाल किया गया, जिसका आप सरकार के समय इस्तेमाल किए जाने पर भाजपा पानी में जहर मिलाने के आरोप लगाती थी। अंत में जब यमुना का पानी साफ नहीं हुआ और बिहार विधानसभा चुनाव के कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छठ घाट पहुंचने का कार्यक्रम बन गया तो यमुना के तट पर गंगा के पानी से एक तालाब निर्मित किया गया। उसके सहारे यमुना की सफाई का दावा किया गया। लेकिन आम आदमी पार्टी के नेताओं की सक्रियता से इसकी पोल खुल गई और बाद की शर्मिंदगी से बचने के लिए प्रधानमंत्री वहां नहीं गए। अब सवाल है कि क्यों दिल्ली की सरकार हवा की गुणवत्ता या यमुना की सफाई के मामले में इस किस्म के दावे कर रही है? दिल्ली में 27 साल से भाजपा की सरकार नहीं थी। इन 27 वर्षों में यमुना लगातार गंदी होती गई और ट्रैफिक से लेकर कई और घटनाक्रम रहे, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ा। इसमें भाजपा की कोई गलती नहीं है। फिर अगर वह नौ महीने में हवा की गुणवत्ता नहीं सुधार सकी या यमुना की सफाई नहीं कर सकी तो इसके लिए कोई उसे दोष नहीं देगा। उसे ईमानदारी से बताना चाहिए कि उसे सिर्फ नौ महीने ही मिले हैं और इतना समय पर्याप्त नहीं है। उसे अपनी ईमानदार कोशिशें दिखानी चाहिए। लेकिन उलटे उसने आंकड़े छिपा कर हकीकत को दबाने का प्रयास किया और झूठ फैलाया। इससे उसकी मंशा पर सवाल उठते हैं। यह धारणा बनती है कि दिल्ली सरकार को कुछ करना नहीं है, बल्कि आंकड़े छिपा कर झूठे दावे करने हैं और ऐसे ही किसी दिन वह दावा कर देगी कि यमुना साफ हो गई और दिल्ली में कोई वायु प्रदूषण नहीं है। ऐसा होना बहुत खतरनाक है।

-अजीत द्विवेदी

अफगानिस्तान के साथ खड़े... भारत के ऐलान से जोश में तालिबानी सरकार, पाकिस्तान का पानी रोकने की तैयारी, मुनीर की उड़ी नींद

एजेंसी काबुल

भारत और पाकिस्तान के बीच बीते कई महीनों से सिंधु जल संधि पर तनातनी चल रही है। इस बीच एक और नया 'वाटर वॉर' क्षेत्र में छिड़ता दिख रहा है। भारत ने अफगानिस्तान को कुनार नदी पर एक बांध बनाने के लिए अपना समर्थन दिया है, जो पाकिस्तान के साथ काबुल की साझा नदी है। यह ऐसे समय में हो रहा है जब दोनों देश एक-दूसरे से उलझे हुए हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच हाल ही में सीमा पर भीषण सैन्य संघर्ष देखने को मिला है।पाकिस्तान के साथ संघर्ष के बाद तालिबान के नेतृत्व वाली सरकार ने भारत की तरह इस्लामाबाद का पानी रोकने की रणनीति अपनाई है। तालिबान ने जल्दी ही कुनार नदी पर बांध बनाने का ऐलान किया है। तालिबान सरकार के जल मंत्री अब्दुल लतीफ मंसूर ने कहा है कि अफगानों को अपने पानी का प्रबंधन करने का अधिकार है और वह इस पर आगे बढ़ेंगे। कुनार नदी करीब 5,000 किलोमीटर बहती है। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में हिंदू कुश पर्वतों से निकलने वाली ये नदी कुनार और नंगरहार प्रांतों से होते हुए अफगानिस्तान में काबुल नदी में मिलती है। दोनों मिलकर पाकिस्तान में वापस आती हैं।यह पाकिस्तान में बहने वाली सबसे बड़ी नदियों में से एक है। यह खैबर पख्तूनख्वा क्षेत्र के लिए सिंचाई, पेयजल और जलविद्युत शक्ति का प्रमुख स्रोत है। तालिबान की ओर से नदी पर बांध बनाने का निर्णय पिछले कुछ हफ्तो में दोनों देशों के बीच सीमा पर हुई हिंसक झड़पों के बीच आया है।दोनों पक्षों का दावा है कि सीमा पार से हुई इन गोलीबारी में भारी नुकसान हुआ है। अफगानिस्तान का यह कदम अप्रैल में पहलगाम हमले के बाद भारत के सिंधु जल संधि को स्थगित करने जैसा है। भारत ने कुनार नदी पर बांध बनाने की अफगानिस्तान की योजना का समर्थन करते हुए कहा कि वह जलविद्युत परियोजनाओं सहित सतत जल प्रबंधन में काबुल का समर्थन करने के लिए तैयार है। भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा कि दोनों देशों के बीच जल संबंधी मामलों में सहयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। सलमा बांध इस सहयोग का एक आदर्श उदाहरण है। भारत का सहयोग तालिबान को बांध बनाने में आसानी कर सकता है। तालिबान का कुनार नदी पर बांध बनाने का निर्णय पाकिस्तान के लिए एक चिंता का विषय है। बांध से नदी के पानी का प्रवाह बाधित होगा, जो पाकिस्तानी लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। पाकिस्तान में यह नदी और इसकी सहायक नदियां पेशावर शहर के बीस लाख से ज्यादा निवासियों की पेयजल और स्वच्छता संबंधी जरूरतों को पूरा करती है। पाकिस्तान को कुनार नदी से हर साल औसतन 17 मिलियन एकड़ फीट (MAF) पानी मिलता है। अफगानिस्तान इस पर बांध बनाता है तो पाकिस्तान के जल प्रवाह में अनुमानित तीन MAF की कमी आ सकती है। यह नदी 1 अप्रैल से 10 जून तक की शुरुआती खरीफ फसल के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस समय तरबेला बांध अपने अंतिम स्तर पर पहुँच जाता है और सिंधु नदी में पानी का भंडारण बहुत कम होता है। इसके अलावा यह पाकिस्तान के लिए दोहरी जल समस्या बन जाएगा क्योंकि पूर्व में भारत और पश्चिम में अफगानिस्तान से उसकी नदियों पर दबाव का सामना करना पड़ेगा। सिंधु समझौता प्रभावित होने से पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में फसलें खतरे में हैं। वहीं तालिबान के फैसले से उसको सबसे बड़े प्रांत खैबर पख्तूनख्वां में दिक्कत का सामना करना पड़ेगा।

इजरायली यहूदियों के 'रक्षक' बनकर मुस्लिम दुनिया को धोखा देने जा रहे मुल्ला मुनीर! दांव पर लगाई पाकिस्तान की साख

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर इजरायल को लेकर बड़ा दांव खेलने की तैयारी में हैं। रिपोर्टों के मुताबिक, पाकिस्तान गाजा में शांति व्यवस्था की अमेरिकी पहल के तहत अपने 20000 सैनिकों की तैनाती करने जा रहा है। इसके लिए जनरल असीम मुनीर की अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए और इजरायल की मोसाद के चीफ के साथ गुप्त बैठक भी हो चुकी है। पाकिस्तानी आर्मी चीफ इसे बड़े कूटनीतिक दांव की तरह देख रहे हैं, लेकिन विश्लेषकों का कहना है कि इसके पीछे एक ऐसा चक्रव्यूह छिपा है, जिसके चलते यह पाकिस्तान और इजरायल दोनों के लिए विस्फोटक हो सकता है। पाकिस्तान के लिए यह खतरा उसके घर से ही शुरू होता है, जो आगे बढ़कर इस्लामिक दुनिया में उसकी साख को मटियामेट कर सकता है। दशकों से पाकिस्तानी सेना ने कट्टरपंथियों को पाला-पोसा है, जिसके चलते देश में फिलिस्तीनी आंदोलन को लेकर प्रबल भावना है तो इजरायल को लेकर उतनी ही गहरी नफरत है। जनरल मुनीर पाकिस्तानी सेना को इस्लामी हितों के संरक्षक के रूप में पेश करते हैं। ऐसे में उसे इजरायल के साथ गठबंधन करने वाली ताकत के रूप में देखा गया तो स्थितियां विस्फोटक हो सकती हैं। पाकिस्तानी सेना का यह कदम देश में मौजूद इस्लामिक गुटों को भड़का सकता है, जो अंततः राजनीतिक अराजकता को न्योता देगा। इसके साथ ही गाजा में शांति सेना की तैनाती एक खतरनाक फैसला है। शांति मिशन सहमति और विश्वसनीय तटस्थता पर निर्भर करते हैं। गाजा में ऐसा कुछ भी नहीं है। पाकिस्तानी सैनिकों पर वही लोग हमला कर सकते हैं, जिनकी रक्षा करने की जिम्मेदारी उन पर है। या फिर इससे भी बदतर स्थिति हो सकती है, जिसमें वे इजरायली बलों से टकराव में फंस सकते हैं। रणनीतिक रूप से पाकिस्तान का यह फैसला इस्लामिक दुनिया में उसके संबंधों के लिए भी खतरा बन सकता है। ईरान, तुर्की और कतर जैसे हमास के कट्टर समर्थक मुस्लिम देश पाकिस्तान के फैसले को इस्लामिक दुनिया से धोखे की तरह देखेंगे। उनकी नजर में पाकिस्तान छोटे आर्थिक या राजनीतिक लाभ के लिए पश्चिमी और इजरायल के हाथों में खेल रहा है। ऐसी सोच पाकिस्तान को मुस्लिम दुनिया में अलग-थलग कर सकती है, जिसका वह नेतृत्व करने का सपना देखता है। इजरायल के लिए इसके खतरे अलग हैं, लेकिन बहुत गंभीर भी हैं। गाजा में पाकिस्तानी सैनिकों को आमंत्रित करना उसकी आंतरिक राजनीतिक सहमति और सुरक्षा सिद्धांत के लिए चुनौती होगा। इजरायल ने उन देशों की किसी भी सैन्य भागीदारी से दूरी बनाए रखी है, जो उसकी वैधता को नकारते हैं। इसलिए पाकिस्तानी सेना की उपस्थिति घरेलू स्तर पर प्रतिक्रिया का कारण बन सकती है। इजरायली दक्षिणपंथी इसे संप्रभुता और सुरक्षा के साथ समझौता मानेंगे। ऐसे में कोई भी घटना- जैसे आकस्मिक झड़प, खुफिया जानकारी लीक होना या पाकिस्तानी सैनिकों पर हमला- कूटनीतिक संकट खड़ा कर सकती है।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन को बड़ा संदेश! अमेरिका के साथ 10 साल वाले डिफेंस एग्रीमेंट से कैसे बदलेगी भारत की भूमिका

एजेंसी नई दिल्ली

रक्षा मंत्री 12वीं आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक - प्लस (ADMM-Plus) में हिस्सा लेने के लिए मलेशिया में हैं। इस दौरान एक अहम डेवलपमेंट में, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके अमेरिकी समकक्ष पीट हेगसेथ ने एक नया 10-साल का डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट साइन किया है। इससे, दोनों देशों के बीच स्ट्रेटेजिक और सिक्योरिटी कोऑपरेशन मजबूत होगा। नया भारत-अमेरिका रक्षा फ्रेमवर्क समझौता रणनीतिक लॉजिस्टिक्स, जॉइंट प्रोडक्शन और टेक्नोलॉजी ट्रांसफर को अपने मुख्य स्तंभों के रूप में शामिल करता है। माना जा रहा है कि यह इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यह समझौता सैन्य इंटरऑपरेबिलिटी को गहरा करेगा। इससे एक-दूसरे के बेस, लॉजिस्टिक्स और रखरखाव सुविधाओं का आसानी से इस्तेमाल किया जा सकेगा। यह समझौता भारत के स्वदेशी रक्षा उत्पादन और आधुनिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण एडवांस डिफेंस टेक्नोलॉजी तक लंबे समय तक पहुंच भी सुनिश्चित करता है। यह इंडो-पैसिफिक सुरक्षा ढांचे को मजबूत करता है, जो दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में चीन की आक्रामकता के खिलाफ एक एकजुट मोर्चा दिखाता है। इसके अलावा, यह ड्रोन और AI-बेस्ड वॉरफेयर में जॉइंट रिसर्च, डेवलपमेंट और नेक्स्ट-जेनरेशन प्रोजेक्ट्स के जरिए भारत के डिफेंस एक्सपोर्ट और इनोवेशन इकोसिस्टम को भी बढ़ावा देता है। यह डील ASEAN सिक्योरिटी फ्रेमवर्क के अंदर भारत की भूमिका को और बढ़ाती है। इससे यह एक रीजनल स्टेबलाइजर और मैरीटाइम कोऑपरेशन के लिए एक पसंदीदा पार्टनर बन जाता है। खास बात यह है कि सिंह और हेगसेथ पहली बार आमने-सामने मिले हैं। सिंह इस महीने की शुरुआत में वाशिंगटन जाने वाले थे, लेकिन US द्वारा लगाए गए टैरिफ की वजह से हुए तनाव के कारण यह दौरा कैंसिल हो गया था। इससे पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कुआलालंपुर में सिंगापुर के रक्षा मंत्री चान चुन सिंग के साथ भी एक द्विपक्षीय बैठक की। यह बैठक भारत के प्रमुख साझेदारों के साथ रक्षा संबंधों को मजबूत करने के मकसद से की गई थी। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग में लगातार बनी हुई तेजी की तारीफ की। इसके सभी पहलुओं पर आपसी फायदे वाली पार्टनरशिप को और आगे बढ़ाने की अपनी कमिटमेंट को दोहराया। उन्होंने चल रहे रक्षा मुद्दों और बनी हुई चुनौतियों का रिव्यू किया और चल रहे रक्षा उद्योग और टेक्नोलॉजी सहयोग पर चर्चा की।

अमेरिकी सपना चुराया गया... H-1B वीजा पर ट्रंप प्रशासन का नया विज्ञापन, भारतीयों के सिर मढ़ा बड़ा आरोप

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका के डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन के लेबर डिपार्टमेंट ने एक नया विज्ञापन जारी किया है। सोशल मीडिया पर जारी इस विज्ञापन में कंपनियों पर H-1B वीजा कार्यक्रम का दुरुपयोग करने और युवा अमेरिकियों की जगह विदेशी कर्मचारियों को नौकरी देने का आरोप लगाया गया है। डिपार्टमेंट ने खासतौर से भारतीयों पर अमेरिकी युवाओं की नौकरी छीनने का आरोप लगाया है। इसमें कहा गया है कि H-1B वीजा प्रणाली से सबसे ज्यादा फायदा भारत ने उठाया है। लेबर डिपार्टमेंट की ओर से एक्स पर किए गए पोस्ट में कहा गया है कि युवा अमेरिकियों से उनका सपना छीन लिया गया। ऐसा हुआ क्योंकि H-1B वीजा के व्यापक दुरुपयोग के कारण उनकी नौकरियां विदेशी कर्मचारियों को दे दी गईं। हम कंपनियों को उनके दुरुपयोग के लिए जवाबदेह ठहरा रहे हैं और अमेरिकी लोगों के लिए अमेरिकी सपने को फिर से साकार कर रहे हैं।' लेबर डिपार्टमेंट के विज्ञापन का वीडियो 51 सेकंड का है, जो 1950 के दशक के अमेरिकी सपने के दृश्यों- घरों, फैक्ट्रियों और खुशहाल दिखते परिवारों को आधुनिक आंकड़ों से जोड़ता है। विज्ञापन कहता है कि पीढ़ियों से हम अमेरिकियों से कहते आए हैं कि अगर वे कड़ी मेहनत करें तो फिर से अमेरिकी सपने को साकार कर सकते हैं। विज्ञापन में कहा गया है कि राजनेताओं और नौकरशाहों ने कंपनियों को H-1B वीजा का दुरुपयोग करने की अनुमति दी। इसमें भी 72 प्रतिशत H-1B वीजा मंजूरी भारतीयों को मिलती हैं। वीडियो कहता है कि ट्रंप भर्ती प्रक्रिया में अमेरिकियों को प्राथमिकता देकर अमेरिकी लोगों के लिए अमेरिकी सपना फिर से साकार कर रहे हैं। H-1B वीजा को लेकर ट्रंप प्रशासन का रुख लगातार सख्त दिखाता है। लेबर डिपार्मटमेंट का यह विज्ञापन भी उसके प्रोजेक्ट फायरवॉल से मेल खाता है। श्रम विभाग ने इसे सितंबर 2025 में H-1B वीजा अनुपालन का ऑडिट करने के लिए शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कंपनियों को तकनीकी और इंजीनियरिंग क्षेत्रों में अमेरिकी कर्मचारियों की जगह कम वेतन वाले विदेशी पेशेवरों को नियुक्त करने से रोकना है।

कड़ा और कठोर जवाब देंगे... पाकिस्तानी सेना ने आक्रमण पर किसे धमकाया, भारत-तालिबान का नहीं लिया नाम

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तानी सेना के प्रॉपगैंडा विंग इंटर सर्विसेज पब्लिक रिलेशन (आईएसपीआर) ने एक बार फिर धमकी जारी की है। आईएसपीआर के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ किसी भी बाहरी आक्रमण का "कड़ा और कठोर" जवाब दिया जाएगा। उनका यह बयान तालिबान के साथ जारी तनाव और भारत के त्रिशूल सैन्य अभ्यास के बीच आया है। हालांकि, अपने बयान में अहमद शरीफ चौधरी ने भारत या अफगानिस्तान का खुलकर नाम नहीं लिया। उन्होंनें इन दोनों देशों को पाकिस्तान के दुश्मन के नाम से संबोधित किया।पाकिस्तान और अफगानिस्तान में इस महीने कई बार सीमा पर गंभीर सैन्य झड़पें हुई हैं। इन झड़पों में दोनों ही पक्षों के सैकड़ों लोग मारे गए हैं। इसके बाद से ही पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा बंद है। दोनों पक्ष तुर्की के शहर इस्तांबुल में वार्ता भी कर रहे हैं, लेकिन इसका कुछ परिणाम निकलना नहीं दिख रहा है। इस्लामाबाद ने अपनी ओर से मांग की है कि तालिबान आतंकवादी समूहों को पाकिस्तान के खिलाफ अपनी धरती का इस्तेमाल करने से रोके। हालांकि, तालिबान ने अफगान धरती से आतंकवादियों को अपनी गतिविधियां संचालित करने देने के आरोप से इनकार किया है। खैबर-पख्तूनख्वा (केपी) के एबटाबाद जिले के विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षाविदों के साथ आज एक बैठक को संबोधित करते हुए, आईएसपीआर के महानिदेशक ने जोर देकर कहा, "सशस्त्र बल देश की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं और किसी भी बाहरी आक्रमण का कड़ा और कठोर जवाब दिया जाएगा।" लेफ्टिनेंट जनरल चौधरी ने विस्तार से बताया कि "पाकिस्तान ने आतंकवाद और फित्ना अल ख़्वारिज के खिलाफ प्रभावी कदम उठाए हैं।" फित्ना अल-ख़्वारिज एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल सरकार प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से जुड़े आतंकवादियों के लिए करती है। नवंबर 2022 में सरकार के साथ इस समूह के नाजुक युद्धविराम समझौते के समाप्त होने के बाद से, देश में, विशेष रूप से खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में, आतंकवादी हमलों में वृद्धि देखी गई है, जिनमें ज़्यादातर पुलिस, क़ानून प्रवर्तन कर्मियों और सुरक्षा बलों को निशाना बनाया जाता है। बयान में आगे बताया गया है कि बैठक के दौरान, लेफ्टिनेंट जनरल चौधरी ने पाक-अफगान तनाव और मरक-ए-हक सहित वर्तमान सुरक्षा स्थिति पर भी चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि "उपस्थित छात्रों और शिक्षकों ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।" पाकिस्तानी सेना ने 22 अप्रैल के पहलगाम हमले से लेकर 10 मई को ऑपरेशन बन्यानुम मरसूस के समापन तक भारत के साथ संघर्ष की अवधि को "मरक-ए-हक" नाम दिया है।

पुतिन-जिनपिंग देंगे जवाब... ट्रंप के तत्काल परमाणु बम परीक्षण करने का ऐलान बन सकता है दुनिया के तबाही की वजह

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का एक आदेश दुनिया का ध्यान खींच रहा है। ट्रंप ने पेंटागन को दूसरे देशों के परीक्षण कार्यक्रमों के साथ परमाणु हथियार परीक्षण फिर से शुरू करने का निर्देश दिया है। ट्रंप विस्फोटक परमाणु परीक्षणों को फिर से शुरू करते हैं तो यह दुनिया के लिए दुर्भाग्यपूर्ण कदम होगा। इससे दूसरे परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र विशेष रूप से रूस और चीन जवाबी घोषणा करेंगे और हथियारों की होड़ को बढ़ावा मिलेगा। यह हम सभी और पूरी मानवता को खतरे में डालेगा। द कन्वर्सेशन के मुताबिक, ट्रंप अगर फैसले पर आगे बढ़ते हैं तो हथियारों की दौड़ के अलावा भी खतरा है। इससे वैश्विक स्तर पर रेडियोधर्मी उत्सर्जन का गंभीर खतरा पैदा होगा। अगर ऐसे परमाणु परीक्षण भूमिगत किए जाते हैं तो भी इससे रेडियोधर्मी पदार्थों के संभावित उत्सर्जन और उत्सर्जन के साथ-साथ भूजल में संभावित रिसाव का खतरा बना रहता है। परमाणु हथियारों के परिणामों को समझने से सेनाओं को उनके उपयोग की योजना बनाने में मदद मिलती है। अपने सैन्य उपकरणों और लोगों को विरोधियों की ओर से परमाणु हथियारों के संभावित उपयोग से बचाने में भी मदद मिलती है। हालांकि द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद से देशों ने नए हथियारों के डिजाइन के विकास के हिस्से के रूप में परीक्षण का उपयोग किया है। परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न होने वाली भारी पर्यावरणीय और स्वास्थ्य समस्याओं ने 1960 के दशक की शुरुआत में देशों को कुछ वर्षों के लिए वायुमंडलीय परीक्षणों पर रोक लगाने के लिए प्रेरित किया। अमेरिका ने 1992 में और फ्रांस ने 1996 में परमाणु परीक्षण रोक दिए। चीन और रूस ने भी 1990 के दशक के बाद कोई परीक्षण नहीं किया है। परमाणु हथियारों के निषेध पर संधि पर अब दुनिया के आधे देशों ने हस्ताक्षर कर दिए हैं। हालांकि सभी नौ परमाणु-सशस्त्र देश (अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, यूके, भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और इजरायल) अधिक सटीक, लंबी दूरी तक मार करने वाले, तेज और अधिक छिपाए जा सकने वाले परमाणु हथियार विकसित करने में अभूतपूर्व धनराशि का निवेश कर रहे हैं। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से परमाणु हथियारों पर लगाम लगाने वाली सभी कठिन परिश्रम से प्राप्त संधियां रद्द कर दी गई हैं। अब केवल एक ही संधि शेष है, जो दुनिया के 90% परमाणु हथियारों पर लगाम लगाती है, जो अमेरिका और रूस के पास हैं। यह नई START संधि है, जो अगले साल फरवरी में समाप्त होने वाली है। इसका मतलब है कि दुनिया के सामने मौजूद अस्तित्वगत खतरों का सबसे प्रामाणिक आकलन फिलहाल पहले से कहीं ज्यादा है।

मेलबर्न में रुका 17 साल का विजय रथ, ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 4 विकेट से हराया

एजेंसी मेलबर्न

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच टी20 सीरीज का दूसरा मुकाबला मेलबर्न में खेला गया। इस मुकाबले को ऑस्ट्रेलियाई टीम ने बड़ी आसानी के साथ जीत लिया। इस जीत के साथ ही ऑस्ट्रेलिया ने इस सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। सीरीज का पहला मैच रद्द होने के कारण इस मैच में दोनों ही टीमों के लिए बढ़त हासिल करने का अच्छा मौका था, लेकिन टीम इंडिया इस मौका का इस्तेमाल नहीं कर सकी। अब भारत को अगर यह सीरीज जीतनी है तो उन्हें आने वाले तीनों मुकाबलों को जीतना होगा। भारतीय क्रिकेट टीम ने इस मुकाबले से पहले मेलबर्न के एतिहासिक MCG में कुल 6 टी20 मुकाबले खेले थे। जिसमें टीम इंडिया को 4 मैचों में जीत मिली थी। वहीं सिर्फ एक मैच टीम इंडिया इस वेन्यू पर हारी थी। यह हार साल 2008 में आई थी। इसके बाद से भारतीय टीम एक भी मैच नहीं हारी और सभी मुकाबले को जीती, लेकिन 17 सालों के बाद भारतीय टीम का विजय रथ अब रुक गया है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गए इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान मिचेल मार्श ने टॉस जीता और भारतीय टीम को पहले बल्लेबाजी करने का न्योता दिया। टीम इंडिया ने इस दौरान निराशाजनक प्रदर्शन किया। टीम इंडिया इस मैच में 18.4 ओवर में 125 रन के स्कोर पर ऑलआउट हो गई। इसके बाद रन चेज में ऑस्ट्रेलियाई टीम ने काफी तेजी से रन बनाए और सिर्फ 13.2 ओवर में 6 विकेट खोकर 126 रन बनाकर मैच अपने नाम कर लिया। टीम इंडिया को इस मैच में 4 विकेट से हार का सामना करना पड़ा। टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर लगातार भारतीय टीम की बैटिंग ऑर्डर में छेड़छाड़ कर रहे हैं। इस मुकाबले में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिला। एशिया कप में जब टीम इंडिया अच्छा प्रदर्शन करके आ रही थी, फिर भी ऑस्ट्रेलिया में बैटिंग ऑर्डर को छेड़ा गया। हर्षित राणा को प्लेइंग 11 में फिट करने के लिए शिवम दुबे को नीचे बल्लेबाजी करने के लिए भेजा जा रहा है। संजू सैमसन को 5वें नंबर से तीसरे नंबर पर प्रोमोट कर दिया गया। जिसके कारण टीम इंडिया की बल्लेबाजी इस मैच में कमजोर नजर आई।

क्या दूसरे टी20 में भी बारिश बनेगी विलेन, मौसम कर सकता है मजा किरकिरा

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरा टी20 मैच आज मेलबर्न में खेला जा रहा है, लेकिन बारिश की आशंका ने क्रिकेट प्रेमियों की चिंता बढ़ा दी है। मौसम विभाग के अनुसार मैच के समय बारिश की अच्छी संभावना है। इससे मैच छोटा हो सकता है या पूरी तरह रद्द भी हो सकता है। यह जानकारी मेलबर्न के मौसम पूर्वानुमान पर आधारित है। मेलबर्न में शुक्रवार को होने वाले इस दूसरे टी20 मैच के लिए मौसम का हाल अच्छा नहीं है। AccuWeather रिपोर्ट के मुताबिक, बारिश की संभावना काफी ज्यादा है। अगर बारिश होती है तो यह मैच पिछले मैच की तरह छोटा हो सकता है। इससे दोनों टीमों के लिए मुश्किल खड़ी हो सकती है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरे टी20 मैच के लिए प्रतिष्ठित मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) जाने वाले क्रिकेट फैंस को आज शाम आसमान पर नजर रखनी पड़ सकती है क्योंकि खेल के शुरुआती दौर में मौसम ठंडा

और नम रहने की उम्मीद है। शाम 8 बजे से 11 बजे तक, मौसम में धीरे-धीरे सुधार होने की उम्मीद है। तापमान 17C से 16C के बीच रहेगा, आर्द्रता 79% से बढ़कर 87% हो जाएगी और आसमान आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। रात 8 बजे के बाद बारिश की संभावना काफी कम होकर 13% रह जाती है, जिससे खेल के निर्बाध रूप से चलने की उम्मीद है। इसके अलावा, शाम 6 बजे तापमान लगभग 19C रहेगा, हल्की बारिश होगी और 44% संभावना है कि बारिश होगी। शाम तक तापमान धीरे-धीरे गिरेगा - शाम 7 बजे 18C और रात 8 बजे तक 17C - और कुछ जगहों पर हल्की बूंदाबांदी की संभावना बनी रहेगी। हवाएं धीमी रहेंगी, लगभग 4 किमी/घंटा की गति से बहेंगी, जिससे खेल के लिए अपेक्षाकृत शांत वातावरण रहेगा। रात 9 बजे के बाद, बारिश में काफी कमी आने की उम्मीद है, केवल 20-23% संभावना है और आसमान आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। रात 9 बजे तक तापमान 16C और रात 11 बजे तक 15C तक ठंडा हो जाएगा। जैसे-जैसे रात बढ़ेगी, आधी रात के बाद धुंध छा सकती है, लेकिन तब तक खेल पूरा हो जाना चाहिए।

गेंदबाज हर्षित राणा ने बल्ले से मचाया धमाल! डेविड मिलर को पछाड़कर बनाया बड़ा रिकॉर्ड

एजेंसी मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में खेले गए दूसरे T20I मैच में टीम इंडिया की बल्लेबाजी बुरी तरह फ्लॉप रही, लेकिन इस निराशा के बीच एक तेज गेंदबाज ने बल्ले से कमाल करते हुए एक खास रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। तेज गेंदबाज हर्षित राणा ने 33 गेंदों में 35 रनों की महत्वपूर्ण पारी खेलकर ऑस्ट्रेलिया की धरती पर T20I में सबसे बड़ी पारी खेलने वाले बल्लेबाजों की सूची में डेविड मिलर जैसे दिग्गज को पीछे छोड़ दिया। पूरी टीम इंडिया 18.4 ओवर में सिर्फ 125 रन ही बना सकी, लेकिन हर्षित की यह पारी मुश्किल हालात में टीम के लिए संजीवनी साबित हुई। मैच में भारतीय टीम की शुरुआत बेहद खराब रही और टीम के 5 विकेट सिर्फ 49 रन पर गिर गए थे। इस मुश्किल हालात में टीम मैनेजमेंट ने शिवम दूबे से ऊपर बल्लेबाजी के लिए हर्षित राणा को भेजा। हर्षित ने मैनेजमेंट के भरोसे को सही साबित किया और ओपनर

अभिषेक शर्मा के साथ मिलकर छठे विकेट के लिए 63 गेंदों में 56 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी निभाई। हर्षित राणा की 35 रनों की पारी इसलिए खास रही क्योंकि उन्होंने यह उपलब्धि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ, उसी के घर में T20I में हासिल की। इस पारी के साथ ही, उन्होंने T20I में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उसी के घर में सबसे बड़ी व्यक्तिगत पारी खेलने वाले बल्लेबाजों की सूची में अपना नाम दर्ज कराया। उन्होंने डेविड मिलर को पछाड़ा। हर्षित ने उनसे एक रन ज्यादा बनाकर उन्हें पीछे कर दिया। इस सूची में उन्होंने जो रूट, मोहम्मद रिजवान, दिनेश कार्तिक, वीरेंद्र सहवाग और ऋषभ पंत जैसे कई बड़े नामों को भी पीछे छोड़ दिया, जो यह दर्शाता है कि कितने दबाव में उन्होंने यह अहम योगदान दिया। हर्षित राणा (35) और अभिषेक शर्मा (68) के अलावा कोई भी भारतीय बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा भी पार नहीं कर सका, जो टीम की हार का मुख्य कारण बना। हालांकि, एक तेज गेंदबाज का बल्लेबाजी क्रम में ऊपर आकर इस तरह का प्रदर्शन करना, टीम इंडिया के लिए एक अच्छा संकेत है।

5 खिलाड़ियों की वजह से हारा भारत! मेलबर्न में होना पड़ा शर्मसार

एजेंसी नई दिल्ली

मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का दूसरा मुकाबला खेला गया। ऑस्ट्रेलिया ने 4 विकेट से यह मुकाबला अपने नाम कर लिया। भारत टॉस गंवाकर पहले बैटिंग करते हुए 125 रन पर ऑल आउट हो गया था। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया ने 13.2 ओवर में 4 विकेट रहते यह टारगेट चेज कर लिया। आइये, आपको बताते हैं इस मैच में भारत के उन 5 खिलाड़ियों के बारे में, जो अगर फेल न होते तो मैच का स्कोर कुछ और हो सकता था।

भारतीय टीम के युवा खिलाड़ी तिलक वर्मा दूसरे टी20 में अपना खाता भी नहीं खोल पाए और 2 गेंद खेलकर डक पर आउट हो गए।

संजू सैमसन दूसरे टी20 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे नंबर पर बैटिंग करने के लिए उतरे। हालांकि, 4 गेंद खेलकर सिर्फ 2 रन बनाकर आउट हो गए।

सूर्यकुमार यादव पहले टी20 में सूर्यकुमार यादव की बैटिंग देखने के बाद लगा कि वह फॉर्म में आ गए। लेकिन, दूसरे टी20 में फिर वह जल्दी आउट हो गए। उन्होंने 4 गेंद में सिर्फ 1 रन बनाया।

शुभमन गिल टी20 में भारत के उपकप्तान शुभमन गिल भी फ्लॉप रहे। उनको जोश हेजलवुड ने आउट किया। 10 गेंद में 5 रन बनाकर गिल आउट हो गए।

हर्षित राणा आप लोग सोचेंगे कि हर्षित राणा का नाम इस लिस्ट में क्यों हैं। उन्होंने तो बल्ले से रन भी बनाए हैं। राणा ने बल्ले से रन जरूर बनाए हैं। लेकिन, उन्होंने 35 रन बनाने के लिए 33 गेंद खेली। इसके अलावा गेंदबाजी में 2 ओवर में 27 रन खर्च कर डाले और कोई विकेट भी नहीं लिया।

व्यापार

डील या ड्रामा, न चीन झुका, न अमेरिका जीता, फिर भारत पर ये संकट के बादल कैसे

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका और चीन के बीच व्यापार को लेकर चल रही तनातनी में अहम मोड़ आया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की हालिया मुलाकात ने सालों से बढ़ते तनाव को कम करने का संकेत दिया है। लेकिन, भारत समेत दुनिया भर के उभरते बाजारों के लिए असली मायने इस बात में हैं कि आगे क्या होता है। हालांकि, एक बात साफ है कि दुनिया में शक्ति का संतुलन तेजी से बदला है। भारत के सामने भी इसने कई तरह की चुनौती खड़ी कर दी है। वह इस पावर प्ले का अहम हिस्सा है। बाजार के जानकारों का मानना है कि इस घटना से एक बड़ी सीख मिलती है। वह यह है कि शक्ति का संतुलन बदल रहा है। मार्केट एक्सपर्ट मनीष सिंह कहते हैं, 'सबसे बड़ी बात यह है कि अमेरिका को आगे भी चीन को रियायतें देनी पड़ेंगी। जो हुआ है उससे बिल्कुल साफ है। इसे अमेरिका की जीत के तौर पर पेश नहीं किया जा सकता। यह बस समझदारी का नतीजा है कि कुछ चीजें ऐसी हैं जो अमेरिका कर नहीं सकता या जिसमें वह अच्छा नहीं है और उसे समझौता करना ही पड़ेगा। चीन दिखा रहा है कि बराबरी के तौर पर बातचीत कैसे की जाती है।' सिंह ने यह भी कहा कि भले ही भारत अभी बराबरी की हैसियत से बातचीत करने की स्थिति में न हो। लेकिन, नई दिल्ली के लिए मैसेज साफ है, 'चीन ने रास्ता दिखाया है कि अगर आप खुद को अंदरूनी तौर पर मजबूत बनाते हैं और आपके पास विकल्प होते हैं तो आप भी एक दिन बराबरी पर बातचीत कर सकते हैं... अमेरिका के पास वे सारे मजबूत पत्ते नहीं हैं जो लोग सोचते हैं, क्योंकि पिछले 10-20 सालों में बहुत कुछ बदल गया है।' यह बहुत ही अहम सवाल है। भारत को चीन से दूर जा रही ग्लोबल कंपनियों से काफी फायदा हुआ है। खासकर ट्रंप के पहले कार्यकाल में शुरू हुई टैरिफ वॉर के दौरान। लेकिन, वाशिंगटन और बीजिंग के बीच अगर सहमति बनती है तो क्या भारत की सप्लाई-चेन का फायदा खतरे में पड़ जाएगा? मनीष सिंह मानते हैं कि ऐसा हो सकता है। उन्होंने

समझाया कि अमेरिकी कंपनियां या पश्चिमी देश चीन से इसलिए हटे थे क्योंकि उन्हें टैरिफ वॉर का डर था। यह बहुत साफ है कि अमेरिका उस युद्ध को जीत नहीं सकता। सिंह के मुताबिक, जो कुछ अभी हो रहा है उसे 'सब्सक्रिप्शन डिप्लोमेसी' कहा जा सकता है। इसका मतलब है बड़े समझौतों के बजाय छोटे, रिन्यूएबल सौदे। उन्होंने कहा, 'आप छोटे-छोटे सौदे देखेंगे, जैसे कल हमने देखे। इन्हें मैं सब्सक्रिप्शन डिप्लोमेसी कहता हूं क्योंकि आपके पास 12 महीने का सौदा होता है जिसे रिन्यू किया जा सकता है। इसमें शर्तों को बदलने की गुंजाइश है। यह अवधि समाप्त होने से पहले ही रिन्यूअल के लिए आ सकता है।' सिंह ने यह भी कहा कि ऐसे छोटे-छोटे सौदे उभरते बाजारों के लिए फायदेमंद हैं। उनके मुताबिक, 'अगर यह सामान्य बात बन जाती है कि रियायतें दी जाएंगी और सौदे होंगे तो यह उभरते बाजारों, खासकर चीन और अन्य देशों के लिए बहुत अच्छी खबर है... अगर इससे व्यापार बढ़ता है तो यह भारत सहित सभी के लिए अच्छी खबर है।' विदेशी निवेशक 2025 में भारतीय इक्विटी से लगभग 1.9 लाख करोड़ निकाल चुके हैं। इससे वैश्विक जोखिम लेने की क्षमता पर चिंताएं बढ़ गई हैं। लेकिन, सिंह का मानना है कि व्यापक आर्थिक तस्वीर अभी भी उत्साहजनक है। उन्होंने कहा, 'अगर हम फेड के कल या बुधवार के फैसले को देखें तो यह बताता है कि फेड ने अभी यह तय नहीं किया है कि ब्याज दरें कहां जाएंगी... मेरा मानना है कि फेड दिसंबर में ब्याज दरें घटाएगा और हालात आसान होंगे।' उन्होंने हालिया निकासी के बावजूद विकास की संभावनाओं पर आशावाद जाहिर किया। वह बोले, 'मैं विकास को लेकर बहुत उत्साहित हूं। मुझे लगता है कि फेड गलत है। महंगाई कोई समस्या नहीं है... मेरे लिए अमेरिका और चीन के बीच तनाव कम होना बहुत सकारात्मक होगा।' जी2 दुनिया की ओर से बढ़ रही है ग्लोबल अर्थव्यवस्थ सिंह का तर्क है कि ग्लोबल अर्थव्यवस्था 'जी2 दुनिया' की ओर बढ़ रही है। यह एक ऐसी दुनिया है जहां अमेरिका और चीन को एक-दूसरे पर निर्भर रहकर सह-अस्तित्व में रहना होगा। उन्होंने कहा, 'मैंने इसे कभी युद्ध के रूप में नहीं देखा। मैंने इसके बारे में लिखा है कि हम एक जी2 दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं जहां अमेरिका और चीन को सह-अस्तित्व में रहना होगा... अमेरिका के पास मजबूत स्थिति नहीं है और मेरे लिए यह बहुत सकारात्मक है क्योंकि बहुत सारा निवेश जो रुका हुआ था... अब फिर से प्रवाहित होगा।' बाजार इसे बड़ी सफलता नहीं, बल्कि तनाव कम होने के तौर पर देख रहे हैं। सिंह का मानना है कि बाजार इसे एक लंबी प्रक्रिया की शुरुआत के रूप में देख रहे हैं, न कि अचानक समाधान के रूप में। उन्होंने कहा, 'मैं कहूंगा कि बाजार इसे एक जारी रहने वाले सौदे के रूप में देख रहा है। मेरा मतलब है, मुझे नहीं लगता कि बाजार वास्तव में सोचता है कि कोई बड़ा सौदा हुआ है।' उन्होंने समझाया, 'आप वास्तव में यह देख रहे हैं कि क्या तनाव कम हुआ है, क्या भविष्य में चर्चा करने और सहमत होने का रास्ता तय हो गया है और यही हुआ है। तो इसने बाजार पर क्या असर डाला है, वह यह है कि नवंबर में समय सीमा आने के कारण जो जोखिम बढ़ा था, वह चला गया है, भले ही वह तीन महीने या छह महीने के लिए ही क्यों न हो।'

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से कितनी कमाई, आदिवासी बहुल क्षेत्र की कैसे चमकी किस्मत

एजेंसी नई दिल्ली

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ने अपने उद्घाटन के बाद से ही कमाई के मामले में शानदार प्रदर्शन किया है। इसने पर्यटन को जमकर बढ़ावा दिया है। अक्टूबर 2018 में राष्ट्र को समर्पित होने के बाद से इस विशाल प्रतिमा ने 400 करोड़ रुपये से ज्यादा का रेवेन्यू टिकट बिक्री से कमाया है। इसे देखने 1.75 करोड़ से ज्यादा पर्यटक आ चुके हैं। यह प्रोजेक्ट न केवल सरदार वल्लभभाई पटेल को अनूठी श्रद्धांजलि है। अलबत्ता, इसने गुजरात के आदिवासी बहुल क्षेत्र को प्रमुख पर्यटन केंद्र में बदल दिया है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है और रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी आदिवासी बहुल नर्मदा जिले के केवड़िया में स्थित है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की टिकट बिक्री से होने वाली कमाई के ताजा आंकड़े बताते हैं कि अक्टूबर 2023 तक 400 करोड़ रुपये से ज्यादा का रेवेन्यू प्राप्त हुआ है। इस अवधि में 1.75 करोड़ से अधिक पर्यटक इस अद्भुत स्मारक को देखने आए। यह आंकड़ा प्रतिमा की लोकप्रियता और उसके प्रति लोगों के आकर्षण को दर्शाता है। नवंबर 2018 से अक्टूबर 2019 तक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ने 82 करोड़ रुपये का टिकट रेवेन्यू हासिल किया था। इस दौरान लगभग 29 लाख पर्यटक वहां गए थे। यह दर्शाता है कि प्रतिमा ने अपने शुरुआती चरण में ही अच्छा प्रदर्शन किया। नवंबर 2018 से फरवरी 2020 तक गुजरात सरकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार, टिकट बिक्री और पार्किंग शुल्क से कुल 116.31 करोड़ रुपये की आय हुई थी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह आय केवल प्रत्यक्ष राजस्व है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आसपास के क्षेत्रों में पर्यटन, होटल, परिवहन और अन्य व्यापारिक गतिविधियों से होने वाला अप्रत्यक्ष

आर्थिक लाभ इससे कहीं ज्यादा हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी 31 अक्टूबर 2018 को गुजरात के केवड़िया (अब एकता नगर) में राष्ट्र को समर्पित की गई थी। बहुत ही कम समय में यह जगह वर्ल्ड क्लास टूरिज्म डेस्टिनेशन बन गई है। यह प्रोजेक्ट सरदार वल्लभभाई पटेल को शानदार श्रद्धांजलि देने के साथ गुजरात के इस आदिवासी बहुल क्षेत्र को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके कारण क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार विकसित हुआ है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की सबसे बड़ी सफलता यह है कि इसने अपने उद्घाटन के तुरंत बाद ही भारत के सबसे अधिक देखे जाने वाले स्मारकों में अपनी जगह बना ली और लगातार राजस्व के रिकॉर्ड बनाए। इसने आगंतुकों की संख्या के मामले में कई वैश्विक और राष्ट्रीय स्मारकों को पीछे छोड़ दिया है।पर्यटन केंद्र में बदला आदिवासी बहुल क्षेत्र स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का प्रभाव केवल टिकट बिक्री तक ही सीमित नहीं है। इसने केवड़िया (एकता नगर) के पूरे आदिवासी क्षेत्र को समग्र पर्यटन केंद्र में बदल दिया है। अब यहां केवल स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ही नहीं, बल्कि जंगल सफारी, चिल्ड्रन न्यूट्रीशन पार्क, फूलों की घाटी, बोटिंग, रिवर राफ्टिंग, विभिन्न गार्डन और अन्य मनोरंजक गतिविधियां भी विकसित की गई हैं। इन नई सुविधाओं के कारण पर्यटक अब केवल एक दिन के बजाय यहां दो-तीन दिन रुकने लगे हैं। इससे क्षेत्र में पर्यटन को और बढ़ावा मिला है। इस पर्यटन केंद्र के विकास ने स्थानीय निवासियों के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी पैदा किए हैं। मार्च 2020 तक, लगभग 3000 लोगों को पर्यटक गाइड, सुरक्षा गार्ड, ड्राइवर और अन्य ऑपरेशन स्टाफ के रूप में प्रत्यक्ष रोजगार मिला था। यह स्थानीय लोगों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। पर्यटन में बढ़ोतरी के कारण क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का भी विकास हुआ है। बेहतर कनेक्टिविटी, होटलों की उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है। इन सभी विकासों ने स्थानीय लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में मदद की है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी सिर्फ एक स्मारक नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा प्रोजेक्ट है जिसने एक पूरे क्षेत्र की तस्वीर बदल दी है।

कार्तिक मास में तुलसी विवाह का महत्वः देवोत्थान एकादशी पर ऐसे पाएं लक्ष्मी-विष्णु का आशीर्वाद

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव पूरे भारत वर्ष में धूमधाम के साथ मनाया जाता है। मान्यता है कि कार्तिक मास में जो भी व्यक्ति तुलसी जी का विवाह भगवान शालीग्राम से कराता है उसको सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है। इस दिन देवोत्थान एकादशी तथा भीष्म पंचक एकादशी भी मनाई जाती है। दीपावली के ठीक बाद पड़ने वाली इस एकादशी को प्रबोधिनी एकादशी भी कहा जाता है। कहा जाता है कि कार्तिक मास में तुलसी के पास दीपक जलाने से अनंत पुण्य प्राप्त होता है। तुलसी को साक्षात लक्ष्मी का निवास माना जाता है इसलिए कहा जाता है कि जो भी इस मास में तुलसी के समक्ष दीप जलाता है उसे अत्यन्त लाभ होता है। इस दिन सुबह उठ कर स्नान आदि से निवृत्त हो सच्चे मन से व्रत रखना चाहिए और शाम को एक सुंदर मण्डप की स्थापना कर विधि पूर्वक गाजे बाजे के साथ तुलसी जी का विवाह भगवान शालीग्राम से कराना चाहिए। तुलसी भगवान विष्णु को काफी प्रिय हैं। तुलसी का विवाह करने के बाद पौधा किसी ब्राम्हण को देना चाहिए। तुलसी विवाह का आयोजन इसलिए किया जाता है क्योंकि देवोत्थान एकादशी से छह महीने तक देवताओं का दिन प्रारंभ हो जाता है। इसलिए तुलसी का भगवान श्री हरि विष्णु के शालीग्राम स्वरूप के साथ प्रतीकात्मक विवाह कर श्रद्धालु उन्हें बैकुण्ठ धाम के लिए विदा करते हैं। सर्वप्रथम विवाह के तीन माह पूर्व से ही तुलसी के पौधे को नियमित सींचें और पूजन करें। उसके बाद विवाह मुहूर्त में मंगलगान और मंत्रोच्चारण से मंडप का निर्माण करें और चार ब्राह्मणों द्वारा गणपति-मातृका पूजन और पुण्याहवाचन कराएं। तत्पश्चात मंदिर की साक्षात मूर्ति के साथ लक्ष्मीनारायण तथा तुलसी को शुभ आसन पर पूर्वाभिमुख विराजमान करें। यजमान पत्नी के साथ उत्तराभिमुख आसन ग्रहण करे। अब गोधुलीय समय में वर की पूजा करें और मंत्रोच्चार सहित कन्या दान करें। इसके बाद हवन और अग्नि परिक्रमा कराएं और फिर वस्त्र और आभूषण आदि अपने सामर्थ्य अनुसार चढ़ाएं। अब ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद खुद भी भोजन कर लें और अंत में मंगलगान से विवाह कार्यक्रम का समापन करें।

तुलसी विवाह व्रत कथा- भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी सत्यभामा को अपने रूप पर बड़ा गर्व था। वे सोचती थीं कि रूपवती होने के कारण ही श्रीकृष्ण उनसे अधिक स्नेह रखते हैं। एक दिन जब नारदजी उधर गए तो सत्यभामा ने कहा कि आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि अगले जन्म में भी भगवान श्रीकृष्ण ही मुझे पति रूप में प्राप्त हों। नारदजी बोले, 'नियम यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी प्रिय वस्तु इस जन्म में दान करे तो वह उसे अगले जन्म में प्राप्त होगी। अतः तुम भी श्रीकृष्ण को दान रूप में मुझे दे दो तो वे अगले जन्मों में जरूर मिलेंगे।' सत्यभामा ने श्रीकृष्ण को नारदजी को दान रूप में दे दिया। जब नारदजी उन्हें ले जाने लगे तो अन्य रानियों ने उन्हें रोक लिया। इस पर नारदजी बोले, 'यदि श्रीकृष्ण के बराबर सोना व रत्न दे दो तो हम इन्हें छोड़ देंगे।' तब तराजू के एक पलड़े में श्रीकृष्ण बैठे तथा दूसरे पलड़े में सभी रानियां अपने अपने आभूषण चढ़ाने लगीं, पर पलड़ा टस से मस नहीं हुआ। यह देख सत्यभामा ने कहा, यदि मैंने इन्हें दान किया है तो उबार भी लूंगी। यह कह कर उन्होंने अपने सारे आभूषण चढ़ा दिए, पर पलड़ा नहीं हिला। वे बड़ी लज्जित हुईं। सारा समाचार जब रुक्मिणी जी ने सुना तो वे तुलसी पूजन करके उसकी पत्ती ले आईं। उस पत्ती को पलड़े पर रखते ही तुला का वजन बराबर हो गया। नारद तुलसी दल लेकर स्वर्ग को चले गए।

रुक्मिणी श्रीकृष्ण की पटरानी थीं। तुलसी के वरदान के कारण ही वे अपनी व अन्य रानियों के सौभाग्य की रक्षा कर सकीं। तब से तुलसी को यह पूज्य पद प्राप्त हो गया कि श्रीकृष्ण उसे सदा अपने मस्तक पर धारण करते हैं। इसी कारण इस एकादशी को तुलसीजी का व्रत व पूजन किया जाता है।

घर के ईशान कोण में टॉयलेट या गंदगी, झेलनी पड़ेगी भयंकर आर्थिक तंगी

वास्तु के मुताबिक घर में मौजूद गलत संरचना या बनावट न सिर्फ व्यक्ति बल्कि पूरे घर को प्रभावित करती है। इससे घर में निगेटिव एनर्जी बढ़ती है और वास्तु के मुताबिक पूर्व और उत्तर दिशाएं जहां पर मिलती है, उस स्थान को ईशान दिशा कहा जाता है। घर में यह जगह ईशान कोण कही जाती है। वास्तु के मुताबिक ईशान कोण पर देवताओं और आध्यात्मिक शक्तियां निवास करती हैं। ईशान कोण घर का सबसे पवित्र कोना माना गया है। भगवान भोलेनाथ भी उत्तर पूर्व दिशा में रहते हैं और उनका एक नाम ईशान भी है। इसलिए ईशान कोण दिशा को ऊर्जा का स्त्रोत और शक्तिशाली माना गया है। बृहस्पति देव और मोक्षदायी केतु भी इसी दिशा में रहते हैं। इसलिए यह कोण अधिक शुभ माना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस कोण के गलत संरचना का कैसे नुकसान उठाना पड़ सकता है। अगर यह कोण ऊंचा हो तो धन की हानि होती है और उन्नति रुक जाती है। ईशान कोण में उत्तरी दिशा की लंबाई घटने से मकान की गृहस्वामिनी को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। यह दिशा अस्वस्थ, भारी और सूखा आदि हो, तो गृहस्वामिनी को उन्नति के समान धनवृद्धि नहीं हो पाती है।

गंदगी- अगर इस कोण में नगर निकासी, शौचालय या कोई अन्य गंदगी होती है, तो जातक को धन संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उन्नति में बाधा आती है। इस कोण में सेप्टिक टैंक होने से भी धन हानि होती है। इस दोष को दूर करने के लिए आप टैंक के ढक्कन को लाल रंग से रंगे। इससे दोष का प्रभाव काफी हद तक कम हो जाता है।

टॉयलेट- इस कोण में टॉयलेट होने पर जातक का जीवन तबाह हो जाता है। धन हानि होती है और उन्नति रुक जाती है। इस दोष को दूर करने के लिए उपाय के तौर पर दर्पण लगाना शुभ होता है। इसके अलावा आप पानी से भरा बर्तन रख सकते हैं या फिर फिश एक्वेरियम रखना चाहिए।

सीढ़ियां इस कोण में सीढ़ियां होने से कर्जवृद्धि होती है और आर्थिक तंगी आती है। अगर यह कोण कट जाए या घट जाए, तो भयंकर आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। इस कोण में किचन, सीढ़ियां और कबाड़खाना आदि होने पर भी आर्थिक तंगी बनी रहती है। इसके अलावा इस कोण में सीढ़ी, पानी की टंकी और शौचालय आदि नहीं होना चाहिए।

करें ये उपाय कैलाश पर्वत की तस्वीर बता दें कि इस कोण को अन्य सभी कोण से नीचे रखना चाहिए। यह बड़ा, हल्का खुला, साफ और सुगंधयुक्त होना चाहिए। बर्फ से ढके कैलाश पर्वत पर साधना मुद्रा में महादेव, जिनके भाल पर चंद्र और जटा से गंगाजी निकल रही हों। ऐसी तस्वीर लगानी चाहिए।

पक्षियों की तस्वीर- इसके बुरे प्रभाव से बचने के लिए गुरु यंत्र की स्थापना कर सकते हैं। बड़ा शीशा लगाया जा सकता है। या फिर भोजन की तलाश में उड़ते पक्षियों की तस्वीर लगाएं। इससे नकारात्मक ऊर्जा कम होती है।

बैडलक दूर करने के लिए घर में जरूर लगाएं ये 5 पौधे, बनी रहेगी पॉजिटिविटी

हर व्यक्ति चाहता है कि उसके घर में हमेशा खुशहाली और सुख-समृद्धि बनी रहे। लेकिन कई बार घर बनवाते समय या नए घर में शिफ्ट होते वक्त हम कुछ ऐसी गलतियां कर देते हैं, जिससे परिवार में बार-बार समस्याएं आने लगती हैं और वास्तु दोष भी लग जाता है। इसके लिए वास्तुशास्त्र में ऐसे कई उपाय बताए गए हैं जिन्हें करने से घर से वास्तु दोष दूर हो सकता है और परिवार के जीवन से बैडलक को भी दूर किया जा सकता है। अगर आप वास्तु के अनुसार अपने घर में कुछ शुभ पौधे लगा लें तो इससे बेहद शुभ फल की प्राप्ति हो सकती है और घर में सुख-शांति व समृद्धि बनी रहती है। तो आइए विस्तार से जानें वास्तु के मुताबिक 5 लकी पौधे...

रबर प्लांट- वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में रबर प्लांट लगाना बहुत शुभ माना जाता है। ऐसे में अगर आप घर में इस पौधे को लगाते हैं तो यह सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाता है और नकारात्मकता दूर करता है। वास्तु के अनुसार, रबर प्लांट को घर में पूर्व दिशा में रखना बहुत अच्छा माना जाता है। साथ ही, इस बात का भी ख्याल रखें कि उस स्थान पर पर्याप्त मात्रा में धूप आती हो लेकिन वह सीधी पौधे पर न पड़े। हरा भरा रबर प्लांट घर का माहौल सकारात्मक बनाए रखने में सहायक होता है।

पुदीना का पौधा- घर में पुदीना का पौधा लगाना भी वास्तुशास्त्र में बहुत शुभ माना गया है। इसकी महक घर के वातावरण को सुखद बनाए रखने में मददगार साबित होती है। साथ ही, इससे मन को भी शांति महसूस होती है और तनाव कम होगा। अगर आपके घर में किसी न किसी बात को लेकर परिवार के बीच तनाव बना रहता है तो पुदीना का पौधा घर में जरूर लगाएं। इससे घर में सुख-शांति का माहौल बना रहता है। वास्तु के अनुसार, पुदीने का पौधा घर में उस स्थान पर रखना चाहिए जहां पानी का बहाव अधिक रहता हो। लेकिन इसे भूलकर भी दक्षिण दिशा में नहीं रखना चाहिए।

सफेद अपराजिता- ये फूल खूबसूरत दिखने के साथ-साथ पवित्र होते हैं। इन्हें पूजा के दौरान भगवान विष्णु व माता लक्ष्मी को अर्पित करने से बेहद शुभ फल की प्राप्ति होती है। वहीं, नीले रंग के अपराजिता शनिदेव की पूजा में प्रयोग किए जाते हैं। ऐसे में वास्तुशास्त्र के अनुसार अगर आप सफेद अपराजिता का पौधा घर में लगा लें तो इससे बैडलक दूर हो सकता है और धन-धान्य में भी वृद्धि होती है। इसके लिए अपराजिता को घर में उत्तर या पूर्व दिशा की ओर लगाना चाहिए। इससे आपको आर्थिक समस्याओं और दुर्भाग्य से छुटकारा मिल सकता है। साथ ही, इन पवित्र फूलों को पूजा में भी प्रयोग करना चाहिए।

शमी का पौधा- हिंदू धर्म में इस पौधे को बहुत शुभ माना गया है। मान्यता है कि इसे घर में लगाने से शनि के बुरे प्रभाव कम हो सकते हैं। ऐसे में अगर आप शनि के विपरीत प्रभाव के चलते जीवन में समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो घर में शमी का पौधा अवश्य लगाएं। साथ ही, यह पौधा शनिदेव को बहुत प्रिय है। ऐसे में अगर आप वास्तु के अनुसार इसे सही दिशा में लगाते हैं तो इससे शनिदेव की विशेष कृपा प्राप्त हो सकती है। वास्तुशास्त्र में बताया गया है कि शमी के पौधे को हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा यानी ईशान कोण में ही लगाना चाहिए। ऐसा करने से घर में बरकत आती है और फिजूलखर्ची से भी राहत मिल सकती है।

आर्थिक राशिफल : शक्तिशाली अधि योग से मिथुन, तुला सहित इन राशियों का जागेगा भाग्य

मेष राशि के जातकों को फिजूल के खर्चे से बचना होगा। किसी व्यक्ति, बैंक या संस्था से ऋण सोच समझकर लें। पुराने मित्रों का सहयोग मिलेगा और अच्छे मित्र भी बढ़ेंगे। आज पत्नी पक्ष से उत्तम सहयोग प्राप्त हो सकता है। रात्रि का समय परिवारजनों के साथ आमोद प्रमोद में बीतेगा।

वृष राशि आज के दिन बहुत व्यस्तता भरा रहने वाला है। आज ज्यादा भागदौड़ वाले कार्यों को करते समय सावधानी बरतें। पैर में चोट लगने की आशंका नजर आ रही है। आपकी निर्णय लेने की क्षमताओं के कारण आपको आज लाभ मिल सकता है। आज रुके हुए कार्यों की पूर्ति होगी। किसी काम में विनियोग करना पड़े तो दिल खोलकर करें, आगे चलकर उसका भरपूर लाभ मिलेगा। सांयकाल किसी मांगलिक समारोह में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होगा।

मिथुन राशि यदि आप किसी शारीरिक रोग से पीड़ित हैं तो आज के दिन आपके कष्टों में वृद्धि हो सकती है। आज आपके सामाजिक कार्यों में किसी प्रकार का व्यवधान दिख रहा है। हालांकि इस दौरान कुछ अकस्मात लाभ होने से आपकी धर्म, अध्यात्म के प्रति रुचि बढ़ेगी। संतान पक्ष से हर्षवर्धक समाचार मिलेगा। सांय से लेकर रात्रि तक गाने बजाने तथा संगीत में आपकी रुचि रहेगी।

कर्क राशि भाग्य की दृष्टि से आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आपके परिश्रम का अच्छा फल मिलेगा। संतान के प्रति आपका विश्वास और अधिक मजबूत होगा। आज ननिहाल पक्ष से प्रेम एवं विशेष सहयोग मिलने की संभावना है। आप अपनी शान शौकत के लिए धन खर्च करेंगे जिससे आपके शत्रु परेशान होंगे। माता-पिता का आज विशेष ध्यान रखें, कल्पित आशीर्वाद मिलने का चांस है।

सिंह राशि आज का दिन सिंह राशि के जातकों के लिए मिश्रित फलकारक है। मानसिक अशान्ति, खिन्नता एवं उदासीनता के कारण आप भटक सकते हैं। माता-पिता के सहयोग और आशीर्वाद से दिन के उत्तरार्ध में राहत मिलेगी। ससुराल पक्ष से आज नाराजगी के संकेत मिलेंगे। मधुर वाणी का प्रयोग करें अन्यथा सम्बन्धों में कटुता आ जाएगी। यदि नेत्रों से संबंधित कोई कष्ट है तो उसमें सुधार होता दिख रहा है।

कन्या राशि आज आप में निर्भीकता का भाव रहेगा तथा साहसपूर्वक अपने कठिन कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम रहेंगे। आपको अपने माता-पिता का सुख सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी को शारीरिक कष्ट से कुछ आपको परेशानी हो सकती है। इस दौरान फालतू के खर्चों का योग भी बनता हुआ दिख रहा है। आप मन से लोगों का भला सोचेंगे, किन्तु लोग इसको आपकी मजबूरी या स्वार्थ ही समझेंगे। व्यापार में धन लाभ के प्रबल योग हैं।

तुला राशि आज का दिन आपके लिए शुभ फलकारक रहने वाला है। आपके अधिकार व संपत्ति में वृद्धि होगी। आप दूसरों के भले की सोचेंगे एवं दिल से सेवा भी करेंगे। नवम आय भाव में बृहस्पति मिथुन राशि का होकर विराजमान है अतः आज आप अपने गुरु के प्रति पूर्ण भक्ति भाव व निष्ठा रखें। आज नए कार्यों में इनवेस्ट करना आपके लिए शुभ रहेगा।

वृश्चिक राशि आज आपका मन अशांत एवं परेशान रहने वाला है। व्यापार वृद्धि के लिए किए गए प्रयास निष्फल हो सकते हैं। सायंकाल तक आप अपने धैर्य तथा प्रतिभा से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। राज्य में जुड़े किसी प्रकार के वाद विवाद में सफलता मिलने की पूर्ण संभावना है।

धनु राशि आज आपकी विद्या, बुद्धि, ज्ञान की वृद्धि होगी। आपके अंदर दान पुण्य एवं परोपकार की भावना विकसित होगी। आप धार्मिक अनुष्ठानों में रुचि लेकर पूर्ण सहयोग करेंगे। भाग्य की ओर से भी आपको पूर्ण सहयोग मिलेगा, आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। सायं काल से लेकर रात्रि के दौरान किसी प्रकार के पेट के विकार के उभरने की संभावना है। ऐसे में सावधान रहें तथा खान पान पर सयंम बरतें।

मकर राशि आज आपको बहुमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस दौरान कुछ ऐसे अनावश्यक खर्चे भी सामने आएंगे जो कि न चाहते हुए भी मजबूरी में करने पड़ेंगे। ससुराल पक्ष से मान सम्मान मिलेगा। अपने व्यवसाय में भी आपका मन लगेगा एवं रुके हुए कार्य पूर्ण हो जाएंगे। किसी नए कार्य में इनवेस्ट करना भविष्य में आपको लाभ देगा।

कुंभ राशि आज का दिन बुद्धि विवेक से नई-नई खोज करने में व्यतीत होगा। आप सीमित एवं आवश्यकतानुसार ही व्यय करें। आपको अपने परिवार के लोगों से विश्वासघात होने की संभावना है। सांसारिक सुख भोग, नौकर चाकरों का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा। सायंकाल से लेकर रात्रि तक समीप की यात्रा भी हो सकती है, जो लाभकारी रहेगी।

मीन राशि आज चतुर्थ भाव में मिथुन राशि का बृहस्पति होने के कारण बहुत समय से लटका हुआ पुत्र या पुत्री से संबंधित किसी विवाद का हल निकल आएगा। खुशमिजाज व्यक्तित्व होने के कारण अन्य व्यक्ति आपसे सम्बन्ध बनाने की चेष्टा करेंगे। सामाजिक सम्मान मिलने से आपका मनोबल बढ़ा रहेगा। रात्रि में प्रियजनों व परिजनों से हास्य विनोद रहेगा।

तुलसी के पास इन 5 पौधों को लगाना माना जाता है अशुभ, मां लक्ष्मी हो जाती हैं नाराज

हिंदू धर्म में तुलसी का पौधा अत्यंत पवित्र और शुभ माना जाता है। इसे न केवल देवी लक्ष्मी का प्रतीक कहा गया है, बल्कि यह घर में सकारात्मक ऊर्जा और शांति का भी स्रोत है। हर घर के आंगन में तुलसी का पौधा देखने को मिलता है क्योंकि माना जाता है कि जहां तुलसी होती है, वहां भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का वास होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि तुलसी के पास कुछ पौधे लगाने से घर की तरक्की रुक सकती है? दरअसल, ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, ऐसे पौधे घर में नकारात्मक ऊर्जा पैदा कर सकते हैं। इन पौधों को तुलसी के पास लगाने से आर्थिक समस्या, कलह और मानसिक तनाव बढ़ सकते हैं। साथ ही, इससे माता लक्ष्मी भी नाराज हो सकती हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि तुलसी के पास किन पौधों को गलती से भी नहीं लगाना चाहिए। **कैक्टस का पौधा** तुलसी के पास रखना अशुभ माना जाता है। कहा जाता है कि इसके कांटों से निकलने वाली ऊर्जा तुलसी की सकारात्मकता को कम कर देती है। वास्तु के अनुसार, तुलसी के पास कैक्टस रखने से घर में अनचाही रुकावटें और तनाव बढ़ सकते हैं। साथ ही, परिवार में कलह और असंतोष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। **नीम करोली** बाबा के अनुसार, जब भगवान आपकी सुनने वाले होते हैं,

तो पहले मिलते हैं ऐसे इशारे, पूरी होती है हर इच्छा

नींबू के पौधे में औषधीय गुण होते हैं और इसे कई धार्मिक कार्यों में भी इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन वास्तु शास्त्र के अनुसार तुलसी के पास नींबू का पौधा नहीं लगाना चाहिए। ऐसा करने से घर में समृद्धि धीरे-धीरे कम होने लगती है और कार्य में बार-बार बाधाएं आती हैं। साथ ही, इससे धन हानि की संभावना भी बढ़ जाती है। शमी का पौधा भी तुलसी के पास लगाने से बचना चाहिए। वास्तु के अनुसार, तुलसी के पास शमी लगाने से परिवार में विवाद, चिंता और अनहोनी जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। **सफेद दूध वाले पौधे** ऐसे पौधे जिनसे सफेद दूध निकलता है, जैसे मोतिया या कुछ प्रकार की घास, उन्हें तुलसी के पास रखना वर्जित माना गया है। इन पौधों से नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है जो घर की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकती है। साथ ही ऐसे पौधे को तुलसी के पास रखने से आर्थिक तंगी का भी सामना करना पड़ सकता है। **चमेली** भले ही सुगंधित और सुंदर होता है, लेकिन तुलसी के पास इसका पौधा लगाने से वास्तु दोष बढ़ सकता है। साथ ही, इससे घर में सुख-शांति प्रभावित होती है और परिवार के सदस्यों की आय पर भी असर पड़ सकता है।

रन फॉर यूनिटी के माध्यम से सरदार पटेल को दी गई श्रद्धांजलि

आजादी के बाद 565 रियासतों को जोड़ने का काम सरदार वल्लभभाई पटेल ही कर सकते थे - डॉ.पंडाग्रे

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सरदार पटेल ने देश की एकता और अखंडता के लिए जो योगदान दिया वह हर भारतीय के लिए प्रेरणास्त्रोत है। युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। यह बात आमला विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने शुक्रवार को सारनी में आयोजित रन पर यूनिट मैराथन दौड़ के अवसर पर व्यक्त करने का कार्य किया है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थी और जन समुदाय को बताया कि सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नाडियाड शहर वर्तमान खेड़ा जिला गुजरात हुआ था।श्री पटेल भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रहे,उन्होंने 1947 से 1950 तक यह पद संभाला और स्वतंत्रता के बाद 565 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्य के लिए उन्हें भारत का लौह पुरुष भी कहा जाता है। इस अवसर पर नगर पालिका परिषद सारनी के अध्यक्ष किशोर बरदे ने कहा कि रन फॉर यूनिटी केवल एक आयोजन नहीं बल्कि यह देश की एकता और संगठन की भावना का प्रतीक है। हमें सरदार पटेल के जीवन से सीख लेकर समाज में एकता,सद्भाव और सेवा भाव को मजबूत करना चाहिए। सारनी मंडलअध्यक्ष गोलू राजपूत ने कहा कि भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता का उद्देश्य राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुदृढ़ करना है। युवाओं की ऊर्जा और संकल्प इस दिशा में सबसे बड़ी शक्ति हैं। उन्होंने कहा कि हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल की तरफ प्रेरणा लेकर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक हिस्से में जाकर केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं का सफलतापूर्वक बखान करके इसकी जानकारी देना चाहिए जो आने वाले भविष्य के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। विद्युत नगरी सारनी में शुक्रवार को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की 150 वीं जयंती के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल सारनी द्वारा रन फॉर यूनिटी मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया।मैराथन का शुभारंभ नया समाज कल्याण केंद्र सारनी से हुआ, जो जय स्तंभ चौक होते हुए शॉपिंग सेंटर स्थित डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा स्थल तक संपन्न हुआ। समापन अवसर पर बाबा साहेब डॉ.अंबेडकर एवं सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया।मैराथन दौड़ में शहर के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं,शिक्षकों, एमपीपीजीसीएल के अधिकारी-कर्मचारियों पुलिस प्रशासन,नगर पालिका परिषद,भाजपा कार्यकर्ताओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर एकता और समरसता का संदेश दिया।कार्यक्रम में मंडल प्रभारी राजेश आहूजा जिला महामंत्री कमलेश सिंह,जगदीश पवार मंडल अध्यक्ष दीपक पटेल, विधायक प्रतिनिधि जी.पी. सिंह,जग्गी आहूजा सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पहले दिन धमाड़े-11, इक्का-11 एव बीएमडी-11 ने जीते मैच

रामरख्यानी स्टेडियम में पंडाल प्रिमियर लीग सीजन-2 का भव्य शुभारंभ

शनिवार एवं रविवार होंगे रोमांचक मुकाबले मुख्य अभियंता ने किया शुभारंभ

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर के रामरख्यानी स्टेडियम में बाबा मठारदेव क्लब के तत्वावधान में पंडाल प्रिमियर लीग सीजन 2 (पीपीएल-2) टेनिस बॉल क्रिकेट स्पर्धा का शुक्रवार को भव्य शुभारंभ हुआ। पहले दिन तीन रोमांचक मैच खेले गए। पहला मैच धमाडे-11 ने जीता। जबकि दो अन्य मुकाबले इक्का-11 एवं बीएमडी-11 ने जीते।रामरख्यानी स्टेडियम सारनी में बाबा मठारदेव क्लब द्वारा प्रतिवर्ष पंडाल प्रिमियर लीग टेनिस बॉल क्रिकेट स्पर्धा का आयोजन किया जाता है। इस साल पंडाल प्रिमियर लीग सीजन-2 (पीपीएल-2) का आयोजन किया गया। स्पर्धा का शुभारंभ शुक्रवार को सुबह 8.30 बजे सतपुड़ा थर्मल पॉवर प्लांट के मुख्य अभियंता (उत्पादन) वीके कैथवार,अतिरिक्त मुख्य अभियंता एसएन सिंह ने बाबा मठारदेव का पूजन कर किया। इस अवसर पर पिच पूजन के साथ मैच का शुभारंभ किया गया। मुख्य अभियंता श्री कैथवार ने बैटिंग एवं अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री सिंह ने बॉलिंग कर स्पर्धा की विधिवत शुरूआत की। पहला मैच बीएमडी-11 एवं धमाड़े-11 के बीच खेला गया। जिसमें धमाड़े 11 ने पहले बल्लबाजी करते हुए 68 रन बनाए। बीएमडी-11 10 ओवरों में 60 रन ही बना पाई। इस तरह धमाड़े-11 ने पहला मुकाबला जीत लिया। मैन ऑफ द मैच हितेन सिंदूर रहे। दूसरा मैच धमाड़े 11 एवं इक्का इलेवन के बीच खेला गया। धमाड़े 11 ने

54 रनों का लक्ष्य रखा। इक्का इलेवन ने इसे 7 ओवरों में ही हासिल कर लिया। मैन ऑफ द मैच हर्ष पाल रहे। तीसरा और पहले दिन का आखिरी मैच बीएमडी-11 एवं एक्का-11 के बीच हुआ। इक्का इलेवन की पारी लड़खड़ा गई। प्रथम पारी में महज 28 रन ही बने। बीएमडी 11 ने उक्त मैच दो ओवरों में ही हासिल कर लिया। स्पर्धा आयोजन समिति से जुड़े राजेश वागद्रे, मिंटू राजपूत व अन्य लोगों ने बताया कि शनिवार व रविवार को भी पीपीएल-2 स्पर्धा में आकर्षक और रोमांचक मुकाबले होंगे। स्पर्धा का समापन रविवार को होगा। इस दिन सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले होंगे। आयोजन समिति ने क्रिकेट प्रेमियों से मैचों का लुत्फ उठाने का आग्रह किया है।

शासकीय महाविद्यालय में युवा उत्सव कार्यक्रम कब हुआ आयोजन

अपनी प्रतिमा को संवारना जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें -प्राचार्य

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शासकीय महाविद्यालय सारनी में शुक्रवार को जिला स्तरीय युवा उत्सव कार्यक्रम रूपांकन पक्ष के अंतर्गत , कोलाज एवं कार्टूनिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया,कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के छायाचित्र पर पूजा अर्चना के साथ की गई इसके पश्चात प्राचार्य प्रदीप पंद्राम द्वारा युवा उत्सव के जितने भी प्रतिभागी भाग ले रहे उन्हें प्रेरित करते हुए अपने-अपने टैलेंट को निखारने,प्रतिभाओं को निखारने और कार्यक्रम में अधिक से अधिक भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया ।कार्यक्रम में जयवंती हाक्सर महाविद्यालय बैतूल से डॉक्टर जीप साहू एवं डॉ.युगल किशोर सरले ने विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया एवं इसी कार्यक्रम में कमलेश सोनी पी एल एस कंप्यूटर के संस्थापक द्वारा भी अपना उद्बोधन दिया गया जिसमें उन्होंने कहा कि यह निर्भर नहीं करता कि आप किस क्षेत्र से आते हैं आप महाविद्यालय का नाम रोशन करें और निरंतर आगे बढ़ते रहें अपनी कला को निखारते रहने की प्रेरणा दी,कार्यक्रम के निर्णायक के रूप में रीमा अरोड़ा एवं पी एल एस कंप्यूटर के संस्थापक कमलेश सोनी की भूमिका रही। प्रतियोगिता में क्ले मॉडलिंग में प्रथम स्थान भूपेंद्र यादव शासकीय महाविद्यालय सारणी,द्वितीय स्थान शिवानी विकी शासकीय कन्या महाविद्यालय बैतूल एवं तृतीय स्थान मुस्कान मालवी शासकीय महाविद्यालय शाहपुर ने प्राप्त किया,इसी प्रकार कोलाज में प्रथम स्थान स्नेहा बॉस डॉ.भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालयआमला ने प्राप्त किया,द्वितीय स्थान कुमारी अनुष्का पंडौले शासकीय महाविद्यालय सारनी,तृतीय स्थान कुमारी राशि लोखंडे शासकीय जयवंती हाक्सर महाविद्यालय बैतूल ने प्राप्त किया इसी प्रकार कार्टूनिंग में प्रथम स्थान स्नेहा बॉस डॉ. भीमराव अंबेडकर शा. महाविद्यालय आमला द्वितीय स्थान भूपेंद्र यादव शासकीय महाविद्यालय सारनी एवं तृतीय स्थान दिशा राठौर शासकीय जयवंती हाक्सर महाविद्यालय बैतूल ने प्राप्त किया कार्यक्रम में महाविद्यालय का समस्त स्टाफ एवं समस्त छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर मुलताई में निकली रैली, विधायक देशमुख बोले- पटेल ने देश को एक सूत्र में बांधा, "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" का संदेश दिया

दैनिक कारखाने का सफर। मुलताई

मुलताई में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर शुक्रवार को राष्ट्रीय एकता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नगर में एक विशाल एकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें विधायक चंद्रशेखर देशमुख, नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर, जनप्रतिनिधि, अधिकारी, शिक्षक और भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश साहू, उपेंद्र पाठक सहित बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी शामिल हुए। रैली का शुभारंभ सरदार पटेल की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया गया। इसके बाद रैली नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए निकाली गई। देशभक्ति के नारों और बैंड की धुन के बीच बच्चों ने राष्ट्रीय एकता का संदेश लोगों तक पहुंचाया। रैली बस स्टैंड, गांधी चौक

और मुख्य बाजार मार्ग से होते हुए फव्वारा चौक परिसर में पहुंची। यहां सभी प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय एकता की शपथ ली। विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने कहा कि सरदार पटेल ने स्वतंत्र भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया और देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया। उन्होंने युवाओं से उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर ने कहा कि एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है और इसे बनाए रखना हम सबका कर्तव्य है।

"एक भारत, श्रेष्ठ भारत" का संदेश दिया

रैली में विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने बैनर और तख्तियों के माध्यम से "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" का संदेश दिया। कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों और शिक्षकों ने विद्यार्थियों को एकता, सद्भाव और राष्ट्रीय अखंडता बनाए रखने का संकल्प दिलाया। मुलताई में सरदार पटेल जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस पर बड़ी रैलीः बच्चों और जनप्रतिनिधियों ने एकता का संदेश फैलाया

नो डिमांड की वजह से सारनी और खंडवा की इकाई को किया गया बंद

नो डिमांड के नाम पर सारनी की 500 मेगावाट इकाई बंद करना कई तरह का संदेहः डागा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

प्रदेश सरकार ने सारनी में 660 मेगावाट की सुपर क्रिटिकल इकाई स्थापित किए जाने के लिए कैबिनेट में 11 हजार 687 करोड रुपए की राशि स्वीकृत की है लेकिन प्रदेश में बिजली की डिमांड न बढ़ने के कारण 500 मेगावाट के क्षमता वाले पावर प्लांट सारनी और 2520 मेगावाट के थर्मल पावर स्टेशन श्री सिंगाजी थर्मल पावर प्लांट को बंद कर दिया गया है। जिससे प्रदेश सरकार की मंशा सारणी में इकाई स्थापित किए जाने की दिखाई नहीं दे रही है यह बात कांग्रेस के जिला अध्यक्ष निलय डागा ने व्यक्ति किया है। उन्होंने कहा कि सतपुड़ा थर्मल पावर स्टेशन जिसकी क्षमता 500 मेगावाट है, जबकि अमरकंटक थर्मल पावर स्टेशन जिसकी क्षमता 210 मेगावाट है,संजय गांधी थर्मल पावर स्टेशन जिसकी क्षमता 1340 मेगावाट है और श्री सिंगाजी थर्मल पावर स्टेशन जिसकी क्षमता 2520 मेगावाट की है अगर ताप विद्युत गृह के अधिकारी चाहते तो अमरकंटक और संजय गांधी की इकाइयों को भी बंद किया जा सकता था लेकिन इन्होंने जानबूझकर सातपुडा थर्मल पावर स्टेशन सारनी के 500 मेगावाट और श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह खंडवा की 2520 मेगावाट बिजली का उत्पादन बंद करना उचित समझा है। कोयले से चारों थर्मल पावर स्टेशन संचालित होते हैं। मध्य प्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी की बिजली उत्पादन की क्षमता 5400 मेगावाट हुआ करती थी जिसमें से 830 मेगावाट की सारणी की चार बड़ी इकाइयों को डिस्मेंटल किए जाने के निर्देश होने के बाद मध्य प्रदेश में 4570 मेगावाट का उत्पादन ही शेष बचा हुआ है।

नो डिमांड के नाम पर इकाइयों को बंद करना गई भैंस पानी में : मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के जिला अध्यक्ष निलय डागा ने बताया कि नो डिमांड के नाम पर ताप विद्युत गृह सारनी की 250-250 मेगावाट की दोनों इकाइयों को बंद करना इससे यह प्रतीक होता है कि गई भैंस पानी में जब ताप विद्युत गृह सारनी की इकाइयां बिजली के उत्पादन में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है तो नो डिमांड के नाम पर इन इकाइयों को क्यों बंद किया गया है,यह जांच का विषय बना हुआ है यदि कंपनी चाहती तो दूसरे थर्मल पावर स्टेशन को बंद करके सारनी की इकाई से बदस्तूर बिजली का उत्पादन लिया जा सकता था लेकिन इन्होंने ऐसा नहीं किया है जिसकी वजह से प्रदेश सरकार एवं मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के अधिकारियों के कार्य प्रणाली पर सवालिया निशान खड़ा होता दिखाई दे रहा है। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश में जल विद्युत संयंत्र 10 है और दसो को मिलाकर 1186 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है जबकि ताप विद्युत गृह सारनी और श्री सिंगाजी महाराज की इकाइयों को बंद करके 3020 मेगावाट बिजली का उत्पादन बंद कर दिया गया है और इतने बड़े उत्पादन के स्थान पर जल विद्युत संयंत्र से केवल 1186 मेगावाट उत्पादन लेना न्याय संगत नहीं है जबकि वर्तमान समय में संपूर्ण प्रदेश में 9 हजार सात सौ बिजली की डिमांड पहुंच रही है। ऐसे में सारनी की इकाइयों को नो डिमांड के नाम पर बंद किया जाना सोची समझी साजिश का एक हिस्सा माना जा सकता है।

इनका कहना है

प्रदेश में जल विद्युत संयंत्र से बिजली का लक्ष्य प्राप्त हो जा रहा है इसलिए सारनी की इकाई को बंद किया गया है डिमांड बढ़ेगी तो उत्पादन शुरू किया जाएगा।

-एस एन सिंह एडिशनल चीफ इंजीनियर सतपुड़ा ताप विद्युत धारा सारनी

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्प्लेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949